mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-341 | पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा
12 दिसंबर 2024 गुरुवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

एरिना सबालेंका ...
@ पेज 7

आम आदमी पार्टी की शिकायत-भाजपा ने वोटर लिस्ट से नाम हटवाए

कोलकता (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के एक प्रतिनिधि मंडल ने बुधवार को इलेक्शन कमीशन के साथ मुलाकात की।क्क्ने आरोप लगाया कि दिल्ली में विधानसभा चुनाव से पहले बड़े पैमाने पर वोटर

● **केजरीवाल बोले- 3000 पन्नों के दस्तावेज में भाजपा के खिलाफ सबूत**

लिस्ट से लोगों के नाम हटाए गए हैं। चुनावों को प्रभावित करने के लिए भाजपा वोटर्स के नाम कटवा रही है। संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भाजपा पर साजिश रचने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि जिन लोगों के नाम लिस्ट से हटाए गए हैं, उनमें दलित, पिछड़े और पूर्वांचल के लोग शामिल हैं।

इलेक्शन कमीशन ने हमें उचित कदम उठाने का भरोसा दिया है। कहा है कि आगे बिना वेरिफिकेशन किए वोटर लिस्ट से बड़े पैमाने पर नाम नहीं काटे जाएंगे।

केजरीवाल ने कहा, हमने 3000 पन्नों का दस्तावेज पेश किया था। इसमें सबूत थे कि भाजपा बड़े पैमाने पर वोटर्स के नाम लिस्ट से कटवाने की साजिश रच रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि शाहदरा में क्क्क्के पदाधिकारी ने चोरी छिपे 11 हजार वोटर्स की लिस्ट चुनाव आयोग को दी और चुनाव आयोग ने इस पर काम करना शुरू कर दिया। जनकपुरी में 24 क्क्क्क कार्यकर्ताओं ने 4 हजार 874 वोटर्स के नाम काटने का आवेदन दिया है। तुगलकाबाद के एक पोलिंग बूथ के 1337 वोट में 554 वोट काटने के लिए दो लोगों ने आवेदन किया है। दिल्ली में अगले साल फरवरी में विधानसभा चुनाव होने हैं। दिल्ली विधानसभा का कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। पिछला चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था।क्क्ने 70 में से 62 सीटें जीती थीं। भाजपा 8 और कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीत पाई।

संक्षिप्त समाचार

दक्षिण कोरिया के पूर्व रक्षा मंत्री ने खुदकुशी के लिए अंडरवियर का किया इस्तेमाल

दक्षिण कोरिया (एजेंसी)। दक्षिण कोरिया में मार्शल लॉ लागू करने के मामले में जांच जारी है। इस बीच इस मामले में गिरफ्तार पूर्व रक्षा मंत्री किम योंग-ह्यून ने आत्महत्या का प्रयास किया है। पुलिस के मुताबिक किम को मंगलवार रात पूर्वी सोल में डोंगबू हिरासत केंद्र के बाथरूम में अंडरवियर से बनाई गई रस्सी से खुद को फांसी

लगाने की कोशिश करते हुए पाया गया जिसके बाद स्थिति पर नियंत्रण पा लिया गया। पुलिस ने अपने बयान में कहा कि पूर्व रक्षा मंत्री ने आत्महत्या का प्रयास किया लेकिन उन्हें बचा लिया गया और उनकी हालत स्थिर है।
कोरिया सुधार सेवा के कमिश्नर जनरल शिन योंग हे ने बताया कि किम ने आत्महत्या करने की कोशिश की लेकिन उन्हें बचा लिया गया। सियोल की एक अदालत ने मार्शल लॉ में अहम भूमिका निभाने और सत्ता का दुरुपयोग करने के आरोप में किम के खिलाफ वारंट जारी किया था जिसके बाद बुधवार को उन्हें गिरफ्तार किया गया था। किम तीन दिसंबर को मार्शल लॉ के आदेश के बाद गिरफ्तार किए गए पहले व्यक्ति हैं।

20 लाख रुपये की रिश्वत लेते पकड़ा गया सरकारी वकील

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात एसीबी ने एक दीवानी अदालत के सरकारी वकील को 20 लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा है। अधिकारियों ने इस बारे में जानकारी देते हुए बुधवार को बताया कि सरकारी वकील के 2 दलालों को भी एक पक्षकार से रिश्वत लेने के इस मामले में गिरफ्तार किया गया है। बताया जा रहा है कि शिकायतकर्ता से रिश्वत के रूप में कुल 50 लाख रुपये मांगे गए थे जिसमें से 20 लाख रुपये वकील ने पहले लेने की बात कही थी और बाकी का पैसा अदालत का आदेश आने के बाद दिया जाना था। वकील ने 20 लाख रुपये की रकम अपने बिचौलियों को एक दुकान पर

देने के लिए कहा था। भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसी द्वारा जारी एक प्रेस रिलीज में पूरे मामले की जानकारी दी गई है। इस प्रेस रिलीज के मुताबिक, खेड़ा जिले के कठलाल दीवानी अदालत में सरकारी वकील के रूप में काम कर रहे राजेंद्र गढवी को मंगलवार को शिकायतकर्ता से घूस लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया। विज्ञप्ति में कहा गया है कि गढवी के 2 बिचौलियों को भी मंगलवार को,ष्क्क ने नरोदा में एक फोटोकॉपी की दुकान पर जाल बिछाकर गिरफ्तार किया।ष्क्क के मुताबिक, गिरफ्तार बिचौलियों की पहचान अहमदाबाद महानगर कोर्ट के वकील सुरेश पाटिल और नरोदा के रहने वाले विशाल पटेल के तौर पर की गई है।

सिनेमा हॉल में पुष्पा-2 के शो के दौरान जमकर चले लात-घूंसे

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ के रिंग रोड स्थित एक सिनेमा हॉल में रात के दौरान पुष्पा-2 का शो चल रहा था। इसी दौरान कुछ लोग हूटिंग करने लगे। इस पर जमकर गाली-गलौज और मारपीट हुई। रिंग रोड स्थित विन मल्टीप्लेक्स में जमकर लात-घूंसे चले। इसकी वजह से सिनेमा हॉल में अफरा-तफरी मच गई। जिसमें कुछ महिलाएं और बच्चे घायल हो गए। सिनेमा हाल के मैनेजर ने विकास नगर पुलिस को इस घटना की सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थिति को कंट्रोल किया। पुलिस ने बवाल कर रहे 6 लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। मल्टीप्लेक्स के मैनेजर की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज किया है।
मल्टीप्लेक्स के मैनेजर ने शिकायत देकर पुलिस को बताया कि सिनेमा हाल में पुष्पा-2 मूवी का शो चल रहा था। इसी दौरान दो गुट आपस में लड़ने लगे और मारपीट करने लगे। झगड़ा कर रहे पक्ष समझाने के बाद भी वहां से नहीं हटे और झगड़ा फसाद करने लगे। बताया जा रहा है कि मारपीट की वजह से सिनेमा हॉल में भगदड़ जैसे हालात बन गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी को वहां से हटाया और अपने थाने थाने ले गई। इसके बाद मूवी फिर से शुरू हुई।

इसका नाम 'भारत अंतरिक्ष स्टेशन' होगा

2035 तक भारत स्थापित करेगा अपना स्पेस स्टेशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बुधवार को ऐलान किया कि भारत 2035 तक अपना स्पेस स्टेशन स्थापित करेगा।

इसे 'भारत अंतरिक्ष स्टेशन' नाम दिया जाएगा। इसके साथ ही, 2040 तक एक भारतीय को चंद्रमा पर भेजने की योजना है।
दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में डॉ. सिंह ने बताया कि 2025 के अंत तक या 2026 की शुरुआत में, गगनयान मिशन के तहत पहला भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में जाएगा। साथ ही भारत अपने गहरे समुद्र मिशन के तहत 6,000 मीटर की गहराई में मानव को भेजने की योजना बना रहा है।

उन्होंने कहा, सरकार स्पेस सेक्टर को मैनेज करने के लिए एक नए कानून पर काम कर रही है। इस सेक्टर में पिछले चार साल में प्राइवेट प्लेयर्स ने सैटेलाइट के निर्माण और लॉन्च में अहम भूमिका निभाई है, जिसके चलते काफी सुधार हुआ है।
डॉ. सिंह ने कहा कि 2014 में जहां स्पेस स्टार्ट-अप्स की संख्या सिर्फ एक थी, वह अब बढ़कर 266 हो गई है। उन्होंने बताया कि भारत ने श्रीहरिकोटा लॉन्च साइट से अब तक 432 विदेशी उपग्रह लॉन्च किए हैं, जिनमें से 397 पिछले 10 साल में ही लॉन्च किए गए हैं।
इसके साथ ही, सरकार ने डिपार्टमेंट ऑफ स्पेस के तहत बनाए इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथराइजेशन सेंटर जैसी सरकारी संस्था बनाई है जो निजी संस्थाओं को प्रोत्साहित करने, रेगुलेट करने और उन्हें स्पेस सेक्टर में काम करने की अनुमति देने में अहम भूमिका निभाती है।

दिल्ली में इस मौसम की अब तक की सबसे ठंडी सुबह

अमरावती(एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में पहाड़ों से आनेवाली ठंडी हवाओं के प्रकोप से तापमान काफी नीचे गिर गया है। राजधानी में बुधवार को इस सर्दी का अब तक का सबसे कम न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया। पारा तेजी से गिरकर 5 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे चला गया है। जबकि एक दिन पहले न्यूनतम

तापमान आठ डिग्री सेल्सियस था। वहीं बुधवार को तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।
मौसम विभाग (आईएमडी) ने कहा, ''सफदरजंग में न्यूनतम तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस सर्दी के मौसम का सबसे कम तापमान है। पिछले साल भी 15 दिसंबर को न्यूनतम तापमान 4. 9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।''

पाकिस्तान में सेना के खिलाफ बोलना पर 150 के खिलाफ केस

पाकिस्तानी सेना के खिलाफ सोशल मीडिया पर दुष्प्रचार

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तानी सेना के खिलाफ सोशल मीडिया पर दुष्प्रचार करने के आरोप में 150 संदिग्धों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया और उनमें से 22 को गिरफ्तार कर लिया गया है। गिरफ्तार किए गए लोगों में से ज्यादातर पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी से जुड़े है। सरकार ने सोशल मीडिया पर दुष्प्रचार करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की प्रतिबद्धता जताई। एक अधिकारी ने बुधवार को इस बारे में जानकारी दी है।
इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (क्क्क्क) के अनुसार 26 नवंबर को इस्लामाबाद में प्रदर्शनकारियों पर की गई गोलीबारी में कम से कम 12 पार्टी कार्यकर्ता मारे गए थे और सैकड़ों घायल हुए थे। पार्टी का यह भी दावा है कि तब से लगभग 105 पार्टी कार्यकर्ता लापता हैं। घटना के बाद, खान के समर्थकों ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी करने के लिए पाकिस्तानी सेना को दोषी ठहराना शुरू कर दिया था। शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली सरकार ने इस बात से इनकार किया है कि प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाई गई थी।

मल्लिकार्जुन खरगे ने साधा निशाना

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव, मल्लिकार्जुन खरगे ने कही ये बात राज्यसभा में विपक्ष द्वारा सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस दिया गया है। इसे लेकर आज कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा, %बहुत पीड़ा दुख के साथ कुछ तथ्यों को रखने आये हैं। भारत का उपराष्ट्रपति पद देश का दूसरा सबसे बड़ा संवैधानिक पद है। राधाकृष्णन, शंकर दयाल शर्मा, हिदायतुल्लाह, के आर नारायणन जैसे महान लोग इस पद पर बैठ चुके हैं। 1952 से आजतक कभी किसी उपराष्ट्रपति कर खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नहीं लाया गया, क्योंकि वे लोग नियम और दलगत राजनीति से ऊपर सदन को चलाते रहे हैं। आज नियम को छोड़कर, राजनीति ज्यादा हो रही है। उन्होंने कहा, %सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि वो किसी पार्टी से नहीं हैं, यानी सदन में वो सभी पार्टी से हैं। हमें अफसोस है आजादी के 75वें वर्ष में उपसभापति के पूर्वाग्रह, उनका आचरण उनके पद की गरिमा के विपरीत रहा है। कभी सरकार के पक्ष में तारीफ के कसीदे पढ़ने लगते हैं, कभी आरएसएस को एकलव्य बताते हैं। दोनों सदनों के विपक्षी नेताओं के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी भी करते हैं। राज्यसभा के सभापति स्कूल के प्रिंसिपल की तरह व्यवहार करते हैं। विपक्षी सदस्यों को 5 मिनट का समय देते हैं लेकिन खुद 10 मिनट का भाषण देते हैं। मल्लिकार्जुन खरगे ने आगे कहा कि संसद में नियमों के तहत जो भी विषय विपक्ष के सदस्य उठाते हैं, उस पर जानबूझकर बहस नहीं होने देते। उपराष्ट्रपति अपने अगले प्रमोशन के लिए सरकार की तरफदारी करते हैं। चेयरमैन के लिए ये कहावत है कि बाड़ ही खेत को खा रही है। सदन न चलने का सबसे बड़ा कारण चेयरमैन हैं। जब भी विपक्ष सरकार से सवाल पूछता है तो सरकार के जवाब से पहले ही चेयरमैन सरकार की ढाल बन जाते हैं। चेयरमैन के आचरण ने देश की गरिमा को बहुत नुकसान किया है। उनसे कोई निजी लड़ाई नहीं है, बहुत सोच विचार और मंथन करके मजबूरी में हमने ये कदम उठाया है।

बांग्लादेश से नाबालिग हिंदू बच्ची शरण लेने पहुंची भारत

इस्कॉन से जुड़ा है परिवार

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में नई सरकार के गठन के बाद से ही अल्पसंख्यक समुदाय पर अत्याचार के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। बांग्लादेश में रहने वाले सनातन धर्मावलंबी भारत सरकार से मदद की गुहार लगा रहे हैं। हिंदुओं पर जारी अत्याचार के बीच एक नाबालिग लड़की को भारतीय सीमा सुरक्षा बल ने मंगलवार रात को बंगाल के उत्तरी दिनाजपुर जिले के चोपड़ा ब्लॉक के फतेपुर बीओपी इलाके में पकड़ा।

यह लड़की बांग्लादेश के पंचागढ़ जिले से है और अपने परिवार के साथ इस्कॉन से जुड़ी हुई है। परिवार के सदस्यों का आरोप है कि बांग्लादेश में इस्कॉन से जुड़े हिंदू परिवारों को लगातार धमकियां मिल रही थीं, जिसमें खासतौर पर बच्चियों को उठाने की धमकियां शामिल थीं। नाबालिग के नाना ने बताया कि बांग्लादेश में हिंदू परिवारों पर हो रहे लगातार हमलों और अत्याचारों के कारण उनकी जान को खतरा था। उन्होंने बताया कि इस्कॉन से जुड़े परिवारों के खिलाफ दुष्कर्म, हत्या जैसे जघन्य अपराध हो रहे हैं और बांग्लादेश हिंदुओं के लिए अब सुरक्षित नहीं रहा है, इसलिए नाबालिग लड़की को मजबूरन भारत भागने पर मजबूर होना पड़ा।

सीमा पार करने की कोशिश, बीएसएफ ने पकड़ा: नाबालिग जलपाईगुड़ी के बेलाकोबा में अपने रिश्तेदार के घर जाने के लिए सीमा पार करने का प्रयास कर रही थी, जब उसे क्क्स्न ने पकड़ा। पुलिस ने लड़की से पूछताछ की और उसे बेलाकोबा के रिश्तेदारों से संपर्क करने के लिए कहा। रिश्तेदारों को बुलाकर पुलिस ने कानूनी कार्रवाई की और बाद में जिला बाल कल्याण संघ के माध्यम से उसे सुरक्षित घर भेजने की व्यवस्था की।

काबुल में भीषण धमाका, तालिबान सरकार के मंत्री समेत कई की मौत

इंडोनेशिया (एजेंसी)। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में बुधवार को एक आत्मघाती बम धमाके में तालिबान सरकार में शरणार्थी मामलों के मंत्री की मौत हो गई। गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने यह जानकारी दी है। अधिकारियों ने बताया कि विस्फोट मंत्रालय के अंदर हुआ और शरणार्थी मामलों के मंत्री खलील हक्कानी की मौत हो गई। हक्कानी ऐसे शीर्षस्थ पदाधिकारी थे जिनकी अफगानिस्तान की सत्ता पर तीन साल पहले तालिबान द्वारा कब्जा किये जाने के बाद हुए बम धमाकों में मौत हुई है। धमाके की तत्काल किसी ने जिम्मेदारी नहीं ली है।

राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा 12 दिसम्बर को होगी जनसुनवाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राष्ट्रीय महिला आयोग, महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध होकर राष्ट्रीय महिला आयोग- आपके द्वार कार्यक्रम के तहत जनसुनवाई का आयोजन किया जा रहा है। जनसुनवाई में महिलाओं के लंबित मामलों के समाधान और उनके मुद्दों पर त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। जनसुनवाई 12 दिसंबर 2024 को दोपहर 1ः00 बजे जिला पंचायत हॉल, ब्लॉक 03, पुराना सचिवालय, सुल्तानिया रोड पर होगी। जनसुवाई में राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती विजया रहाटकर, जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहेंगे। आयोग ने भोपाल और आसपास के क्षेत्रों की महिलाओं से अपील की है कि यदि वे किसी प्रकार की समस्याओं से जूझ रही हैं, तो वे इस जनसुनवाई में भाग लें और अपनी समस्याएं आयोग तक पहुंचाएं। आयोग महिलाओं की समस्याओं के समाधान के लिए हर संभव प्रयास करेगा। जनसुनवाई से संबंधित अधिक जानकारी के लिए साहिल कुमार (9891225547) से संपर्क किया जा सकता है।

खाद्य मंत्री राजपूत ने की छग के सीएम और विधानसभा अध्यक्ष से मुलाकात

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने छत्तीसगढ़ प्रवास के दौरान रायपुर में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से मुख्यमंत्री निवास में सौजन्य और आत्मीय मुलाकात की। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने इस अवसर पर मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ से संबंधित विविध विषयों पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री साय से सारगर्भित चर्चा की। श्री राजपूत ने मध्यप्रदेश में खाद्य विभाग द्वारा किए जा रहे नवाचारों से मुख्यमंत्री श्री साय को अवगत कराया। इस दौरान छग के मुख्यमंत्री श्री साय ने मध्यप्रदेश सरकार के जनहितैषी प्रयासों और निर्णयों की सराहना करते हुए मप्र और छग से जुड़े अन्य मामलों पर भी विचार विमर्श किया। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने मुख्यमंत्री से मुलाकात के बाद छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री डॉ रमन सिंह से भी सौजन्य मुलाकात की। इस अवसर पर खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने छग विधानसभा अध्यक्ष डॉ सिंह को मध्यप्रदेश विधानसभा द्वारा शीत सत्र में किए जा रहे नए प्रयोगों से अवगत कराया।

मंत्री श्रीमती उइके ने बिजली के नवीन उप-केन्द्र सिंगरौलिया का किया लोकार्पण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती सम्पतिया उइके ने 33/11 केव्ही नवीन उप-केन्द्र सिंगरौलिया का लोकार्पण किया। मंत्री श्रीमती उइके ने इस अवसर पर कहा कि प्रदेश सरकार हर क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, विद्युत व्यवस्था जनजीवन की मूल धारा है। इस उपकेन्द्र से किसानों को पर्याप्त और स्थिर वोल्टेज मिल सकेगा, जिससे उनकी कृषि उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि सरकार हर पात्र हितग्राही को जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए जिले में विशेष शिविर आयोजित कर रही है। नवीन उप-केन्द्र निर्माण पर 462.46 लाख रुपये की लागत आई है, जिसे पुनरोत्थान वितरण क्षेत्र सुधार योजना के तहत तैयार किया गया है। यह उप-केन्द्र क्षेत्र के किसानों और स्थानीय निवासियों की विद्युत वोल्टेज की समस्या का समाधान करेगा, जिससे उनकी कृषि और दैनिक जीवन में सुधार होगा। सिंगरौली विधायक श्री रामनिवास शाह ने कहा कि किसानों की वोल्टेज समस्या लंबे समय से प्राथमिकता में थी और इस उप-केन्द्र के चालू होने से यह समस्या दूर हो गई है। उन्होंने कहा, प्रदेश सरकार न केवल 24 घंटे निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कर रही है, बल्कि यह भी सुनिश्चित कर रही है कि हर नागरिक तक योजनाओं का लाभ पहुंचे। इस अवसर पर देवसर विधायक श्री राजेंद्र मेश्राम ने भी कार्यक्रम की सराहना करते हुए इसे क्षेत्र के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताया। विद्युत केंद्र के लोकार्पण ने क्षेत्र में विकास और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रति प्रतिबद्धता को और अधिक सशक्त किया।

प्रदेश में विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रगति के लिये बनाई जा रही अपार आईडी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रगति को ट्रेक करने के लिये ऑटोमेटेड परमानेंट एकेडमिक अकाउंट रजिस्ट्री अपार आईडी बनाने के निर्देश दिए है। अपार आईडी को %वन नेशन-वन स्टूडेंट आईडी के नाम से भी जाना जाता है। प्रदेश में एक करोड़ 45 लाख बच्चों के अपार आईडी तैयार किये जाएंगे। स्कूल शिक्षा विभाग ने प्रदेश के शासकीय और अशासकीय स्कूलों में अपार आईडी बनाने के लिये जिला शिक्षा अधिकारियों को निर्देश दिये है। इस काम तेज गति लाने के लिये पूरे प्रदेश में 9 और 10 दिसम्बर को विशेष अभियान चलाया गया। अपार आईडी से शिक्षा ग्रहण करने की कागजी प्रक्रियाओं में होने वाली समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि कोई छात्र स्कूल बदलता है चाहे राज्य के भीतर उसका सारा डेटा अपार आईडी के द्वारा नये स्कूल में स्थानांतरित हो जायेगा। छात्रों को दस्तावेज या स्थानांतरण प्रमाण-पत्र देने के आवश्यकता नही होगी।

स्वच्छ जल नागरिकों का मूलभूत अधिकार-मंत्री श्रीमती उईके

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उईके ने सिंगरौली जिले के ढोटी में अमृत 2.0 योजना और कायाकल्प 2.0 योजना के अंतर्गत जल प्रदाय एवं सड़क निर्माण कार्यों का भूमि-पूजन किया। उन्होंने कहा कि स्वच्छ जल नागरिकों का मूलभूत अधिकार है और प्रदेश सरकार इसे हर घर तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

मंत्री श्रीमती उइके ने बताया कि अमृत 2.0 योजना के तहत सिंगरौली नगर निगम क्षेत्र के छूटे हुए वार्डों में 164 किलोमीटर पाइप लाइन और 4 पानी टंकियों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की जाएगी। इस परियोजना पर 36.19 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। वहीं, कायाकल्प 2.0 योजना के अंतर्गत 28 किलोमीटर की पीसीसी सड़क का निर्माण किया जाएगा। इससे आवागमन सुगम और सुरक्षित होगा। इस परियोजना की लागत 10.04 करोड़ रुपये है।

मंत्री श्रीमती उईके ने कहा कि प्रदेश सरकार गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने के लिए तत्परता से काम कर रही है। शुद्ध जल और स्वच्छता न केवल स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक हैं, बल्कि राज्य के विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा भी हैं। उन्होंने कहा कि अमृत 2.0 योजना के माध्यम से हर घर में शुद्ध जल पहुंचेगा और कायाकल्प योजना से शहरी क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जाएगा।

सिंगरौली विधानसभा के विधायक श्री राम निवास शाह ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार दोनों मिलकर विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं। अमृत 2.0 और कायाकल्प योजनाएं जनकल्याण की दिशा में एक अहम कदम हैं, जिनसे दूरदराज के क्षेत्रों तक भी विकास की रोशनी पहुंचेगी। नगर निगम महापौर श्रीमती रानी अग्रवाल ने कहा कि इन योजनाओं के माध्यम से सिंगरौली नगर निगम क्षेत्र में शुद्ध पेयजल और बेहतर सड़कों की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।

कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों और नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और योजनाओं को जनहित में मील का पत्थर बताया। इस अवसर पर श्रीमती उईके ने विकास कार्यों की गुणवत्ता बनाए रखने पर जोर देते हुए कहा कि ये परियोजनाएं क्षेत्र के विकास में नए आयाम स्थापित करेंगी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 14 दिसंबर को करेंगे सरसी आइलैंड रिसोर्ट का उद्घाटन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 14 दिसंबर को पर्यटन विभाग द्वारा नवनिर्मित सरसी आइलैंड रिसॉर्ट का उद्घाटन करेंगे। शहडोल जिले में बाणसागर डैम के बैकवाटर पर निर्मित यह रिसॉर्ट प्रमुख पर्यटन स्थल बांधवगढ़ नेशनल पार्क और मैहर के समीप स्थित है। यहां पहुंचने वाले पर्यटकों के लिए यह एक अनूठा अनुभव होगा। इको-सर्किट परियोजना के तहत विकसित यह स्थल क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रमुख सचिव, पर्यटन और संस्कृति विभाग एवं प्रबंध संचालक, म.प्र. टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि, सरसी आइलैंड रिसॉर्ट में पर्यटकों के लिए आधुनिक सुविधाओं का ध्यान रखा गया है।

यहां तीन बोट क्लब बनाए गए हैं, जो वाटर स्पोर्ट्स के रोमांचक अनुभव का अवसर देंगे। पर्यटकों के ठहरने के लिए 10 इको हट्स तैयार किए गए हैं, जहां से प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लिया जा सकता है। खाने-पीने के शौकीनों के लिए एक आकर्षक रेस्टोरेंट की व्यवस्था की गई है।

वन विहार में नेचर कैम्प एवं अनुभूति कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में मध्यप्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड के सहयोग से छात्र-छात्राओं में वन, वन्य-प्राणियों एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा प्रकृति संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की दृष्टि से नेचर कैम्प का आयोजन किया गया। भोपाल शहर एवं उसके आसपास के ग्रामों के शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लिये पक्षी अवलोकन और नेचर कैम्प आयोजित किये जा रहे हैं।

नेचर कैम्प में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (सीएम राइज स्कूल) बरखेड़ा भोपाल के 41 छात्र-छात्राओं एवं 2 शिक्षकों ने भाग लिया। विषय-विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों को पक्षी दर्शन, तितली, वन्य-प्राणी दर्शन, वानिकी और पर्यावरण से संबंधित रोचक गतिविधियाँ करायी गयीं। छात्र-छात्राओं को जानकारी प्रदान कर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया गया।

स्कूली छात्र-छात्राओं को बाघ, तेंदुआ, भालू, मगर, घड़ियाल, चीतल, सांभर, नीलगाय आदि वन्य-प्राणियों का अवलोकन कराया गया। साथ ही ट्रेल वॉक भी करायी गयी। किंगफिशर, ओपन बिल स्टॉर्क, वुलीनेक स्टॉर्क, कार्मोरेंट, जकाना और कूट पक्षियों का अवलोकन कराया गया। नीडम क्षेत्र में कृत्रिम घोंसले तथा पक्षियों के पुतले भी दिखाये गये। इस अवसर पर मिशन लाइफ अंतर्गत पर्यावरण को बचाने के लिये उपस्थित प्रतिभागियों को शपथ दिलायी गयी।

अनुभूति कार्यक्रम के अंतर्गत नवीन प्रेरकों को मास्टर ट्रेनर द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में अनुभूति कार्यक्रम के लिये चयनित मास्टर ट्रेनर डॉ. एस.आर. वाघमारे ने वन विहार राष्ट्रीय उद्यान के 9 कर्मचारियों को नवीन प्रेरकों के रूप में प्रशिक्षण दिया।

नेचर कैम्प के दौरान संचालक वन विहार श्री मीना अवधेश कुमार शिवकुमार, सहायक संचालक श्री एस.के. सिन्हा, इकाई प्रभारी पर्यटन श्री रविकांत जैन और अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

रीडिंग में लापरवाही पर 33 आउटसोर्स मीटर वाचकों तथा 9 अन्य कर्मियों की सेवाएं समाप्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने उपभोक्ताओं की मीटर रीडिंग में लापरवाही बरतने के आरोप में सेवा प्रदाता कंपनी के माध्यम से कंपनी कार्यक्षेत्र में कार्यरत 33 मीटर वाचकों तथा 9 अन्य आउटसोर्स कर्मियों को ड्यूटी से पृथक करने की कार्यवाही की गई है।

साथ ही 40 आउटसोर्स कर्मियों को कार्य में लापरवाही बरतने के चलते चेतावनी जारी की गई है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने बताया है कि उपभोक्ताओं के परिसर में स्थापित मीटर की फोटो मीटर रीडिंग में लापरवाही बरतने और गलत मीटर रीडिंग लेने पर मीटर वाचकों पर सख्त कार्यवाही किये जाने के निर्देश जारी किये गये हैं। कंपनी

कार्यक्षेत्र के रायसेन में 1, सीहोर में 2, दतिया में 3, राजगढ़ में 3, भोपाल में 5, ग्वालियर शहर में 2 बैतूल में 1, भोपाल ग्रामीण में 5, ग्वालियर ग्रामीण में 4, हरदा में 2, मुरैना में 2, नर्मदापुरम में 8, श्योपुर में 2, शिवपुरी में 2 तथा विदिशा में 2 आउटसोर्स मीटर वाचक तथा अन्य आउटसोर्स कर्मियों को आदेशों की अवहेलना और मीटर वाचन में लापरवाही बरतने के आरोप में सेवा से पृथक किया गया है।

मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने मैदानी अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देशित किया है कि उपभोक्ताओं के परिसर पर एक्युरेसी शुद्धता के साथ मीटर वाचन होना चाहिए और मीटर रीडिंग के आधार पर ही उपभोक्ताओं को विद्युत देयक दिए जाएं। उन्होंने स्पष्ट किया है कि मीटर वाचकों के कार्य पर निष्ठा एप के द्वारा निगरानी रखी जाए और जो मीटर वाचक कर्तव्य पालन में लापरवाही बरत रहे हैं, उन्हें सेवा से पृथक किया जाए।

प्रबंध संचालक ने कहा कि उपभोक्ता सेवा सर्वोपरि है। उपभोक्ताओं को कंपनी बेहतर से बेहतर सेवाएं देने के लिए कृत संकल्पित है और इसी दिशा में काम किया जा रहा है। उन्होंने उपभोक्ताओं को जागरूक रहने के लिए कहा है कि जब उनके परिसर की मीटर रीडिंग होती है तो वे मीटर वाचक द्वारा ली गई रीडिंग और मीटर में दर्ज रीडिंग पर नजर रखें ताकि सही देयक मिल सके। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रयास हैं कि बिलिंग संबंधी शिकायतों को शून्य लेवल पर लाया जाए।

पॉवर डिस्ट्रीब्युशन ट्रेनिंग सेन्टर में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के अंतर्गत कार्यरत पॉवर डिस्ट्रीब्युशन ट्रेनिंग सेन्टर द्वारा पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के 210 तृतीय श्रेणी कार्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु पहले चरण में 30 प्रतिभागियों के तीन दिवसीय प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ निदेशक (पीडीटीसी) श्री अनिल कुमार खत्री ने किया। इसी दौरान ग्रामीण विद्युतीकरण निगम के प्रशिक्षण केन्द्र हैदराबाद द्वारा मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के सूचना प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन एवं वित्त अनुभाग के अधिकारियों के लिए ''चेंज मैनेजमेंट, लीडरशिप एंड टीम बिल्डिंग'' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण सत्र भी शुरू हुआ। प्रशिक्षण सत्र के शुभारंभ अवसर पर पॉवर डिस्ट्रीब्युशन ट्रेनिंग सेन्टर के निदेशक श्री अनिल कुमार खत्री ने कहा कि कार्मिकों की कार्यकुशलता और दक्षता में वृद्धि के लिए व्यवहारिक प्रशिक्षण के साथ ही सैद्धांतिक ट्रेनिंग भी आवश्यक है। पॉवर डिस्ट्रीब्युशन ट्रेनिंग सेन्टर द्वारा कार्मिकों को प्रशिक्षित करने की दिशा में निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं और इसके लिए समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर कार्मिकों को सैद्धांतिक और व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिससे विभागीय कार्यों के सुचारू संपादन के साथ ही विद्युतीय कार्य और विद्युत सुरक्षा का ध्यान रखा जाना सुनिश्चित हो रहा है। गौरतलब है कि पॉवर डिस्ट्रीब्युशन ट्रेनिंग सेन्टर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के 210 तृतीय श्रेणी कार्मिकों को विभागीय परिवर्तन, एक्टिव लर्निंग, आर्गेनाईजेशनल इफेक्टिवनेस जैसे विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। ज्ञात हो कि भोपाल शहर के गोविन्दपुरा स्थित मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी का पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन ट्रेनिंग सेन्टर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सेन्ट्रल इंडिया का सबसे बड़ा मान्यताप्राप्त प्रशिक्षण संस्थान है।

'खेलो एमपी गेम्स' के जरिये उत्कृष्ट खिलाड़ी निखर कर आयें - मंत्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि खेलो एमपी गेम्स'' के जरिये उत्कृष्ट खिलाड़ी निखर कर आयें, इसके लिये खेल विभाग, फेडरेशन और एसोसिएशन एक साथ मिलकर आपसी सामंजस्य के साथ काम करें। मंत्री श्री सारंग ने यह बात उनकी पहल पर हुई बैठक में कही। तात्या टोपे खेल स्टेडियम में आयोजित खेल विभागय, फेडरेशन और एसोसिएशन की बैठक में इस बात की सभी ने रजामंदी दी।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि राज्य सरकार और एसोसिएशन/फेडरेशन खेल के उन्नयन और विस्तार के लिये काम कर रही है। हम सब एक ही प्लेटफार्म पर काम करेंगे, तो खेल प्रतिभाएँ निखर कर सामने

आयेंगी। उन्होंने कहा कि खेल में जितना योगदान खेल विभाग का है, उतना ही योगदान फेडरेशन और एसोसिएशन का भी रहा है। विभाग के साथ एसोसिएशन/फेडरेशन डे-टू-डे वर्किंग में साथ मिलकर काम करें। रोजमर्रा के कामों को एक साथ संवाद कर करने से उत्कृष्ट कार्य कर हम धरातल पर उतार सकेंगे। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि पिछले वर्ष एमपी यूथ गेम्स का आयोजन किया गया, जो सफल रहा और लाभ भी मिला। प्रदेश के खेल उन्नयन और खिलाड़ियों के लिये इस बार फिर से एमपी यूथ गेम्स आयोजित किये जायेंगे। इसकी प्रक्रिया पूर्ण रूप से पारदर्शी रहे और खिलाड़ियों का चयन उत्कृष्टता के आधार पर हो सके, इसके लिये फेडरेशन और एसोसिएशन का सहयोग आवश्यक है।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि सभी साथ मिलकर ब्लॉक स्तर से खिलाड़ियों का चयन कर जिला स्तरीय टीम बनायें। जिला स्तर के लिये चयनित खिलाड़ियों से रीजनल टीम में प्रतिभाएँ सामने आयें, जो स्टेट लेवल पर खेलें। सभी के सहयोग से यह पूरी प्रक्रिया पारदर्शी रहेगी। रीजनल टीम में 2-3 ग्रुप भी बनायें। रीजनल लेवल से भागीदारी करने वालों को स्टेट लेवल का प्रमाण-पत्र भी दिया जायेगा। यही उत्कृष्ट खिलाड़ी नेशनल गेम्स में भागीदारी के लिये फेडरेशन और एसोसिएशन के माध्यम से आयोजित कैम्प में ट्रेंड होकर खेलें। इससे ट्रॉयल की प्रक्रिया की जानकारी भी सभी तक पहुँचेगी।

निर्माण कार्य में गुणवत्ता का ध्यान रखें ठेकेदार-राज्य मंत्री गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा है कि आवश्यकता के अनुरूप क्षेत्र में सड़कों और नालियों का निर्माण करवाया जा रहा है। उन्होंने ठेकेदार को निर्देश दिये कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखे । राज्यमंत्री श्रीमती गौर सोमवार को भानपुर मंडल में विकास कार्यों के भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रही थी। उन्होंने भूमिपूजन कार्यक्रम के दौरान रहवासियों की समस्याओं को सुना और उनके निराकरण के लिए अधिकारियों को निर्देश भी दिए। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने वार्ड -72 के शबरी नगर में 27 लाख रुपए लागत की सीमेंट कांक्रीट सड़क निर्माण, वार्ड 72 में 10 लाख रुपए लागत के सीसी रोड, आर सी सी नाली निर्माण, लीलाधर कॉलोनी में 4 लाख रुपये लागत की आरसीसी नाली निर्माण, 27 लाख रुपये लागत से हरदौल बाबा, गीता नगर भानपुर स्कूल के

पीछे आरसीसी नाली और अटल नेहरू नगर में सीसी रोड निर्माण का भूमि-पूजन किया। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कल्याण नगर में गली नंबर 3 और 4 में 18 लाख रुपये लागत के सीमेंट कांक्रीट सड़क के निर्माण का भूमि-पूजन किया। पार्षद श्री विकास पटेल, श्री राजू राठौड़, श्री राजू लोधी, श्री बी एस मरमट, श्री नीलेश गौर और क्षेत्र के रहवासी इस अवसर पर मौजूद थे।

सैकड़ो किसानों ने लगाया चक्कर जाम

मामला गढ़ थाना अंतर्गत खरीदी केंद्र मालती वेयरहाउस बटवा का

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। सेवा सहकारी समिति हिनौती अंतर्गत मल्टी वेयरहाउस बटवा में पिछले तीन दिनों से खरीदी चालू है लगातार खरीदी किसने की जा रही हैं लेकिन आज 11 12.2024 को मालती बेयर हाउस में खरीदी रोक लगने की जानकारी किसानों को हुई आपको बता दें जानकारी लगते ही किसानों द्वारा अपनी धान से लदे ट्रैक्टर रीवा से लाल गांव होते हुए कटरा को जाने वाली सड़क पर चक्का जाम कर दिया जिससे आवागमन प्रभावित हो गया आपको बता दें इस मामले में किसानों द्वारा अपनी अपनी बातें रखते हुए स्थानीय प्रशासन कलेक्टर रीवा से मांग की है कि जब तक पुनः मालती वेयरहाउस खरीदी नहीं चालू होगी तब तक चक्का जाम चालू रहेगा आपको बता दें किसान राघवेंद्र तिवारी द्वारा बताया गया कि हमारी आधी धान की खरीदी की जा चुकी है और जिसमें जो बची हुई है धन उसको वेयरहाउस ले जाने के लिए

बोला जा रहा है।

साथ ही कई किसान ने मीडिया के सामने अपनी बातें रखी है।

वहां स्थानीय सामाजिक का कार्यकर्ता देवेंद्र तिवारी द्वारा अपनी बातें रखी गई है: उनके द्वारा बताया गया कि लगभग मालती बेयर हाउस से हर साल हजारों किसान अपनी धान का कार्य करते हैं लेकिन राजनीतिक एवं प्रशासनिक उदासीन के कारण खरीदी होते हुए मालती वेयरहाउस से खरीदी को कंकर वेयरहाउस के लिए भेजा जाना किसानों के साथ बहुत ही बड़ा छलावा है हमारा कलेक्टर रीवा से मांग है कि पुन मालती वेयरहाउस में खरीदी शुरू की जाए।

किसानों के विरोध के बाद झुका प्रशासन: लगभग 4 घंटे जाम के बाद कलेक्टर रीवा के निर्देशन पर पहुंचे तहसील दार सिरमौर ने किसानों से मिल कर उनकी बात सुनी साथ ही मामले से वरिष्ठअधिकारियों को अवगत कराया जिस पर चर्चा के बाद प्रशासन फिर से मालती वेयरहाउस में खरीदी का आश्वासन दिया गया। और खरीदी हेतु किसानों को फिर से मालती वेयरहाउस जाने हेतु बोला गया।

जिस पर किसानों ने चक्काजाम खोल दिया और आवागवन चालू हो गया: आपको बता दें न्यूज सहित सोशल मीडिया पर मामले की जानकारी पश्चात मनगवा विधायक नरेंद्र प्रजापति भी चक्काजाम स्थलपर पहुंचे और किसानों से चर्चा उपरांत यही खरीदी शुरू होने हेतु अधिकारियों से बात की और

किसानों के साथ खड़े होने की बात कही: आपको बता दें कि सामाजिक कार्यकर्ता देवेंद्र तिवारी सहित किसान राघवेंद्र तिवारी,सत्यम सिंह, रविकांत अग्निहोत्री, राकेश शुक्ला, महेश शुक्ला, दिनेश तिवारी सहित कई किसानों ने प्रशासन सहित स्थानीय विधायक का आभार जताया है।

टीले के टकराकर 8 फीट उछली बाइक, दो की मौत, निमंत्रण खाकर लौट रहे थे

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी के अमिलिया थाना क्षेत्र के सोन नदी पुल के पास तेज रफ्तार बाइक मिट्टी के टीले से टकरा गई। इसके बाद 8 फीट उछलते हुए नीचे गिरी। हादसे में बाइक सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसा अमिलिया थाना क्षे9 के सोन नदी पुल के पास मंगलवार देर रात करीब 11 बजे हुआ। दोनों रात को अमिलिया से निमंत्रण खाकर बहरी की तरफ जा रहे थे। जानकारी लगते ही रात करीब 12 बजे पुलिस पहुंची। जानकारी के अनुसार पप्पू कोल पिता प्यारेलाल कोल बाइक चला रहा था। पीछे शिवप्रसाद दर्जी बैठा था। अंधेरे में मिट्टी का टीला दिखाई नहीं दिया। रफ्तार में बाइक मिट्टी की टीले पर चढ़ गई। हवा में उछलते हुए बाइक नीचे गिर गई। दोनों सिर के बल गिरे। थाना प्रभारी अमिलिया राजेश पांडे ने बताया कि टीम को घटनास्थल पर भेज दिया था। दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए सिहावल अस्पताल भिजवा दिया गया है। मर्ग कायम कर मामले की जांच की जा रही है।

जिले को मिले डीएपी के साथ अन्य फास्फेटिक उर्वरक

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। उपसंचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास ने जानकारी देकर बताया है कि सीधी जिले में किसानों के रबी कृषि कार्य हेतु डीएपी उर्वरक की कमी की पूर्ति हेतु रीवा रैक प्वाइंट से सीधी जिले को 450 मै.टन डीएपी, 500 मै.टन एपीएस, 250 मै.टन टीएसपी एवं बरिगवां रैक प्वाइंट से 500 मै.टन डीएपी प्राप्त हुआ है, जिले में पर्याप्त उर्वरक का भण्डारण हो चुका है। किसी भी प्रकार के उर्वरक की कमी जिले में नहीं है। वर्तमान समय पर जिले में डीएपी के साथ-साथ यूरिया 3056, एनपीके 564 एवं सुपर फास्फेट 108 मे.टन उपलब्ध है। डीएपी विकल्प के रूप में किसान भाई एपीएस 20:20:0:13 एवं नैनो डीएपी उर्वरक का प्रयोग करें। यह उर्वरक विपणन संघ के गोदाम एवं निजी विक्रेताओं के पास उपलब्ध है।

गीता से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है: डॉ. आई.पी.प्रजापति

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार संजय गांधी स्मृति अग्रणी महाविद्यालय सीधी के प्राचार्य डॉ. पी.के.सिंह के मार्गदर्शन में शासकीय महाविद्यालय मड़वास में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर "गीता का महत्व" विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मनोज मिश्रा जिला महामंत्री भाजपा सीधी उपस्थित थे तो विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कृष्णलाल पयासी सदस्य जिला पंचायत सीधी ऊपस्थित थे तो कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आई.पी.प्रजापति ने की । कार्यक्रम की सुरुआत माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ कि गई । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ मनोज मिश्रा ने कहा कि हमे गीता से प्रेरणा ले कर अच्छे कर्म करना चाहिये जिससे समाज का देश का भला हो सके। कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ.आई.पी.प्रजापति जी ने कहा कि गीता से हमे जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है और हमे बहुत कुछ सीखने को मिलता है ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. दीपक अग्निहोत्री ने किया तो आभार प्रदर्शन डॉ रामधारी जायसवाल ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय परिवार के डॉ राजेश पटेल डॉ कमलेश जायसवाल डॉ पंकज मिश्रा डॉ सुरेंद्र गुप्ता प्रो.प्रवीण कुमार डॉ संगीता मिश्रा डॉ पूजा गर्ग डॉ लक्ष्मीकांत कुशवाहा डॉ आकांक्षा मिश्रा डॉ सौरभी गुप्ता डॉ ज्योति रजक डॉ अमिता खरे डॉ संध्या वर्मा अनिल केवट सहित महाविद्यालय के छात्र/छात्राये ऊपस्थित थे।

कॉल रिकॉर्ड ने खोला अंधी हत्या का राज, दो माह बाद आरोपी नासिक से गिरफ्तार

शराब पार्टी के बाद दोस्त ने घोंटा था दोस्त का गला

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र में दो माह पूर्व हुए एक युवक की अंधी हत्या के मामले में पुलिस ने आरोपी को पकड़ने में सफलता हासिल की है. पुलिस के हाथ एक अहम सुराग लगा था जिसके बाद आरोपी युवक को महाराष्ट्र के पूना से गिरफ्तार किया और न्यायालय में पेश करते हुए जेल भेज दिया गया। बताया गया की वारदात के डेढ़ माह बाद आरोपी को आत्मग्लानि थी अपराधबोध होने के चलते उसने अपने गांव के एक परिचित व्यक्ती को फोन किया और हत्या के बारे में उसे विस्तार से जानकारी दी इसके बाद व्यक्ति ने कॉल रिकार्डिक की और थाने जाकर ऑडियो क्लिप पुलिस को दे दी जिसके बाद पुलिस ने आरोपी को महाराष्ट्र के नासिक से गिरफ्तार कर लिया। घटना रीवा के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के डिहिया गांव में स्थित 38 वर्षीय एक युवक उमेश वर्मा का शव उसके ही घर से संदिग्ध परिस्थितियों में बरामद हुआ था शव बरामद होने के बाद घटना की सूचना परिजनों ने पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना स्थल से साक्ष्य एकत्रित किए लोगो से पूछताछ के बाद पुलिस को अशंका हुई की युवक की हत्या की है गई। पुलिस ने मर्ग कायम करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजा और तफदीस में जुट गई।

गांव के एक व्यक्ति ने पुलिस को सौंपी थी कॉल रिकार्डिंग की ऑडियो: घटना के डेढ़ माह बाद युवक की हत्या के मामले में गांव का ही एक व्यक्ती मोबाइल में की गई एक कॉल रिकॉर्डिंग की आडियो क्लिप के साथ बैकुंठपुर थाने पहुंचा। व्यक्ती के द्वारा उपलब्ध कराई गई कॉल रिकॉर्डिंग की ऑडियो क्लिप सुनकर पुलिस भी टीम हैरत में पड़ गई। दरअसल काल रिकार्डिंग की ऑडियो क्लिप किसी और की नही बल्कि मृतक उमेश के दोस्त लालता वर्मा की थी जिसमें अपराधबोध के चलते उसने गांव के एक परिचित युवक से अपने ही दोस्त की गला घोंटकर हत्या किए जानें के बात को कबूली थी। पुलिस की टीम ने तत्काल अपने सीनियर अफसरों को कॉल रिकार्डिंग के बारे के अवगत कराया एसपी विवेक सिंह के निर्देश पर बैकुंठपुर थाना प्रभारी के नेतृत्व में एक पुलिस टीम का गठन किया गया।

पुलिस की टीम ने आरोपी को महाराष्ट्र के नासिक से पकड़ा: पुलिस की एक टीम महाराष्ट्र के लिए रवाना हुई और फोन पर दोस्त की हत्या की बात को कबूल कर रहे युवक लालता वर्मा को नासिक से गिरफ्तार कर लिया पुलिस उसे पकड़ कर रीवा लाई और पूछताछ की तो चौंका देने वाला खुलासा हुआ। आरोपी लालता वर्मा के मुताबिक वह अपने परिवार के साथ महाराष्ट्र के पूना में रहता था पत्नी की तबियत खराब होने के कारण झाडफूंक करवाने के लिए उसे रीवा स्थित अपने गांव डिहिया लेकर आया आया था. बीते 7 अक्टूबर को उसकी पत्नि अपने बच्चों के साथ रीवा स्थित अपने मायके चली गई। और इधर आरोपी पति अपने दोस्त उमेश वर्मा के साथ अपने घर पर शराब पार्टी करने चला गया।

शराब पार्टी के दौरान दोस्त ने घोंटा था दोस्त का गला: इसके बाद शराब पार्टी के दौरान शराब खतम होने के बाद उमेश ने लालता वर्मा को और शराब लाने के लिए 500 रुपए दिए. जिसके बाद 100 रूपए की शराब आई इसके बाद दोनो ने दोबारा शराब पी। नशे की हालत में उमेश ने अपने दोस्त से बाकी के 400 रूपए वापस मांगे उसी दौरान दोनो दोस्तो के बीच विवाद हो गया तभी उमेश वर्मा ने अपने दोस्त लालता वर्मा को लात मार दी जिससे उसके गुप्तांग में चोट लग गई और वह बेहोश हो गया कुछ देर के बाद जब वह होश में आया तो उसने उमेश का गला घोंट दिया जिससे उसकी मौत हो गई. आरोपी ने 7 अक्टूबर को हत्या की थी 3 दिन तक शव कमरे के अंदर ही पड़ा रहा। 10 अक्टूबर को जब उस कमरे से तेज दुर्गन्ध आई तब लोगो ने जाकर देखा तो अंदर शव पड़ा हुआ था।

घटना के बाद आरोपी ने गांव के व्यक्ति से बताई थी हत्या की बात: पुलिस की पूछताछ में आरोपी ने आगे बताया की घटना के बाद से उसे आत्मग्लानि थी घटना दिनांक को वह गांव में अपने परिचित व्यक्ती के पास गया और कहा की मैंने हत्या की है मुझे लाल गांव तक छोड़ दो मगर परिचित ने उसकी बात नही मानी क्योंकि आरोपी ने अधिक मात्रा में शराब का सेवन किया था जिसके चलते व्यक्ती को उसके कथन पर भरोसा नही हुआ और उसने उसकी मदद करने से इनकार कर दिया इसके बाद में आरोपी अपने परिवार के साथ दोबारा वापस पूना चला गया।

इस तरह एक फोन काल से खुला अंधी हत्या का राज: आरोपी को आत्मग्लानि थी की उसके हाथो उसके दोस्त की हत्या हो गई. वारदात के डेढ़ माह बाद उसने पूना में रहकर गांव के एक परिचित व्यक्ती को फोन किया और उससे अपना दर्द बांटते हुए वारदात के सम्बन्ध में विस्तार से बातचीत की. इस दौरान परिचित व्यक्ति ने उसका कॉल रिकार्ड कर लिया और ऑडियो क्लिप पुलिस को सौंप दी जिससे अंधी हत्या का खुलासा हो गया।

अनिल सोनकर - एडिशनल एसपी

अतिक्रमण को लेकर विवाद, झोपड़ी जलाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले के सेमरिया थाना अंतर्गत झगरहा गांव में मंगलवार शाम 4 बजे अतिक्रमण हटाने के लिए राजस्व विभाग और पुलिस विभाग की टीम पहुंची। इस दौरान अतिक्रमणकारी छोटे कोल ने प्रशासन से सात दिन का समय मांगा। इस पर टीम जाने लगी, तभी अतिक्रमण कारी के घर के पीछे पैरा रखने की झोपड़ी में किसी ने आग लगा दी। इसके बाद अफरा तफरी मच गई। प्रशासन और पुलिस कर्मियों ने आग पर काबू पाया। छोटे कोल का आरोप है कि यह आग उर्मिला सोनी के लोगों ने लगाई, जबकि उर्मिला सोनी के पति भारत सोनी का कहना है कि आग स्वयं छोटे कोल ने लगवाई। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

0.44 एकड़ जमीन पर कब्जे को लेकर था विवाद: दरअसल, गांव में 0.44 एकड़ जमीन पर छोटे कोल ने कब्जा कर रखा है। यह जमीन गांव की उर्मिला सोनी ने अपनी बताते हुए करीब सात साल पहले सिविल कोर्ट में केस लगाया। कोर्ट ने उर्मिला के पक्ष में फैसला दिया। इसके बाद कोर्ट के आदेश पर प्रशासन और पुलिस की टीम कब्जा हटाने पहुंची थी। छोटे कोल का आरोप है कि 7 दिन का समय मांगने के बाद टीम वापस जा रही थी, तभी उर्मिला सोनी के पति भारत सोनी दो दर्जन लोगों को लेकर आ गए।

गीता महोत्सव में शामिल हुईं प्रभारी मंत्री

बच्चों के साथ किया नृत्य, अजाक्स निशुल्क कोचिंग सेंटर के भवन लोकार्पण

मीडियश ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले की प्रभारी मंत्री संपत्तियां उइके बुधवार को बैढ़न के उत्कृष्ट डिग्री कॉलेज में आयोजित गीता महोत्सव कार्यक्रम में शामिल हुईं। इस दौरान यहां प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। साथ ही कॉलेज की छात्राओं ने कृष्ण और राधा की वेशभूषा में महाभारत काल के कुछ दृश्यों को प्रस्तुत किया। इसके अलावा कॉलेज की छात्राओं ने छत्तीसगढ़ी भाषा के गानों पर मनमोहक नृत्य भी प्रस्तुत किया। इस नृत्य को देखकर प्रभारी मंत्री संपत्तियां उइके खुद को रोक नहीं पाईं और वह भी बच्चों के साथ झूम उठी।

कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री ने मानव जीवन पर गीता का कितना महत्व है।

इस पर बोलते हुए कहा कि असल मायने में अगर हम गीता को अपने जीवन में धारण कर लें तो हमें कुछ और करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हमारा जीवन दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाएगा। कार्यक्रम के दौरान भोपाल से मुख्यमंत्री मोहन यादव के उद्बोधन को भी सुनाया गया। कार्यक्रम में देवसर विधायक राजेंद्र मेश्राम, सिंगरौली विधायक रामनिवास शाह, महापौर रानी अग्रवाल, देवसर जनपद अध्यक्ष प्रणव पाठक सहित कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला, एसपी मनीष खत्री सहित छात्र-छात्राएं मौजूद रहीं।

अजाक्स निशुल्क कोचिंग सेंटर के भवन लोकार्पण: इसके बाद मंत्री उइके बैढन में अजेक्स के संचालित निशुल्क करियर कोचिंग सेंटर पहुंची। जहां उन्होंने एक बड़े हॉल का लोकार्पण किया। इस हॉल के बन जाने की वजह से यहां 100 से ज्यादा बच्चे बैठकर करियर कोचिंग में भाग ले सकेंगे।

मंत्री ने कहा कि यह बहुत ही नेक कार्य है। यहां पर वह बच्चे जो गरीब हैं। भोपाल और इंदौर कोचिंग करने के लिए नहीं जा सकते हैं। उन्हें यहां नीट, आईएएस, आईपीएस की कोचिंग पढ़ाई जा रही है। आईएएस और आईपीएस आकर ट्रेनिंग दे रहे हैं। सरकार भी हर तरह से ऐसे प्रतिभावान बच्चों के साथ खड़ी है जो आईएएस आईपीएस बनना चाहते हैं। सरकार तो बच्चों को अब विदेश भी पढ़ने के लिए भेज रही है।

अपहरण कर शादी कराने वाले दो गिरफ्तार

सिंगरौली की लड़की को ले गए सीधी, किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली जिले की चितरंगी थाना पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों एक लड़की का अपहरण कर ले गए थे। एक आरोपी ने उसके साथ जबरन शादी की। चितरंगी थाना प्रभारी सुरेंद्र यादव ने बताया कि पराई गांव की की रहने लड़की ने 29 अक्टूबर को थाने में शिकायत दर्ज करवाई थी। उसने बताया था कि 14 अक्टूबर को बड़े पिता के घर करथुआ से पैदल पराई अपने घर आधार कार्ड लेकर आ रही थी। रास्ते में लवकुश द्विवेदी और अभिषेक दुबे मिले। उन्होंने जबरन कार में बैठा लिया। यहां से सीधी लेकर चले गए।

यहां कचहरी परिसर में शादी के

कुछ कागज बनवाए। जबरदस्ती शादी कर ली। इसके बाद मंदिर भी ले गए। मांग में सिंदूर भर दिया, तो मैं रोने लगी। लवकुश और अभिषेक में जान से मारने की धमकी दी। किसी को यह बात नहीं बताने के लिए बोला। जैसे-तैसे घर पहुंची, तो घर वालों को पूरी बात बताई। शिकायत के आधार पर दोनों आरोपियों की पुलिस तलाश कर रही थी, जिन्हें बुधवार को सीधी से गिरफ्तार कर लिया गया है।

बिजनेस न्यूज़

उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक ने नागौद में खोला नया आउटलेट

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। मध्य प्रदेश में 47 बैंकिंग आउटलेट्स और देशभर में 1001 आउटलेट्स के साथ अपनी उपस्थिति बनाए रखते हुए, उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने नागौद, रीवा, मध्य प्रदेश में नया बैंकिंग आउटलेट लॉन्च किया। बैंक इस क्षेत्र में सीमित वित्तीय सेवाओं की पहुंच वाले निम्न-आय वर्ग के व्यक्तियों को जॉइंट लाइबिलिटी ग्रुप मॉडल के माध्यम से माइक्रो-बैंकिंग लोन सुविधाएं प्रदान करेगा। साथ ही बचत खाता, चालू खाता, फिक्स्ड डिपॉजिट और रिकरिंग डिपॉजिट जैसे व्यापक बैंकिंग उत्पाद उपलब्ध होंगे। बैंक विभिन्न लोन उत्पाद जैसे हाउसिंग लोन, बिजनेस लोन, प्रॉपर्टी के खिलाफ लोन, क्रेडिट, बीमा और निवेश उत्पाद भी प्रदान करता है। बैंक का बुनियादी ढांचा, डिजिटल बैंकिंग सुविधाएं और एटीएम नेटवर्क ग्राहकों को एक सुगम बैंकिंग अनुभव प्रदान करता है। एमडी और सीईओ गोविंद सिंह ने कहा, "नागौद में हमारा नया बैंकिंग आउटलेट मध्य प्रदेश में हमारा नेटवर्क मजबूत करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सरेठी में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान शिविर सम्पन्न

शत प्रतिशत हितग्राहियों को जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित करना सुनिश्चित करें : विधायक सीधी

अभियान अंतर्गत आयोजित शिविरों की व्यवस्थाएं दुरूस्त रखने के विधायक ने दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार प्रदेश के साथ-साथ सीधी जिले में भी मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान तथा जन कल्याण पर्व का शुभारंभ किया गया। जनपद पंचायत सीधी के ग्राम पंचायत सरेठी में विधायक सीधी रीती पाठक के मुख्य आतिथ्य तथा जनपद पंचायत सीधी के अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह परिहार की अध्यक्षता में अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के अंतर्गत शिविर सम्पन्न हुआ।

विधायक सीधी पाठक ने कहा कि लोगो के जीवन में खुशहाली

लाने तथा केन्द्र सरकार और राज्य शासन की सभी जनकल्याणकारी योजनाओं से प्रत्येक पात्र हितग्राही को लाभान्वित करने मुख्यमंत्री जी की पहल पर मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का संचालन किया जा रहा हैं। इसमें प्रत्येक ग्राम पंचायत और नगरीय क्षेत्र के प्रत्येक वार्ड में शिविर आयोजित किए जाएंगे। संपर्क दल घर-घर सर्वे कर छूटे हुए पात्र हितग्राहियों का चिन्हांकन करेंगे तथा समय-सीमा में प्रत्येक पात्र हितग्राहियों का चिन्हांकन करेंगे तथा समय-सीमा में प्रत्येक पात्र हितग्राही को लाभान्वित करना सुनिश्चित करेंगे। विधायक ने कहा कि प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री की मंशानुसार अभियान का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। सभी अधिकारी अभियान को पूरी गंभीरता से लें। शिविर की व्यवस्थाएं दुरूस्त रखें। शिविर के पहले ग्राम वासियों को सूचित करें, पात्र हितग्राहियों का चिन्हांकन कर उनके आवेदन प्राप्त कर लें तथा शिविर के दि नही उन्हें लाभान्वित करनेकी कार्यवाही करें। यह एक कामकाजी शिविर है इसके सकारात्मक परिणाम मिलने चाहिए तथा लोगों के जीवन में खुशहाली आनी चाहिए। अभियान के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं है। उन्होने आवेदनों के निराकरण की प्रगति से प्रति सप्ताह अवगत कराने के निर्देश दिए हैं।

विधायक ने ग्रामीणजनों को शासन की योजनाओं के प्रति जागरूक रहने तथा अधिकारपूर्वक योजनाओं का लाभ प्रत्येक हितग्राही तक पहुंचाने में सहयोग करने की अपील की है। विधायक ने कहा कि हमें एक दूसरे पर विश्वास रखना होगा और मिलकर क्षेत्र के विकास के लिए कार्य करना होगा। विधायक ने क्षेत्र के लिए किए जा रहे विकास कार्यों की जानकारी ग्रामवासियों को दी। उन्होने ग्रामवासियों को उनके क्षेत्र में हो रहे कार्यों की निगरानी रखने तथा ग्रामसभा में सहभागिता करने के लिए कहा।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रीवा (म.प्र.)

क्रमांक 4399/न.पा.नि./राजस्व/2024-25 रीवा, दिनांक 09/12/2024

अचल सम्पत्ति नामांतरण विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पूर्व नगर सुधार न्यास रीवा की योजना क्रमांक-8 नेहरू नगर जो नगर पालिक निगम रीवा के स्वामित्व में है, में स्थित भूखण्ड क्रमांक 2/18/564 क्षेत्रफल 2320.00 वर्गफिट श्री कृष्णकान्त दीक्षित पिता श्री मोहनलाल दीक्षित को 30 वर्षीय लीज पर आवंटित है, उक्त भूखण्ड को श्रीमती दीपाली मिश्र पति श्री विनीत कुमार मिश्र निवासी अरूण नगर रीवा (म.प्र.) के नाम नामान्तरण किये जाने हेतु दिनांक 22.11.2024 को आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। उक्त भूखण्ड क्रमांक 2/18/564 के नामांतरण में किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति हो, तो समाचार पत्रों में इस विज्ञप्ति के प्रकाशन के 15 दिवस की अवधि तक कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा में प्रमाणित अभिलेखों के साथ उपस्थित होकर लिखित में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात कोई आवेदन/आपत्ति न तो ग्रहण की जावेगी और न ही मान्य की जावेगी। तत्पश्चात आवेदक श्री कृष्णकान्त दीक्षित पिता श्री मोहनलाल दीक्षित निवासी नेहरू नगर रीवा (म.प्र.) के आवेदन अनुसार भूखण्ड क्रमांक 2/18/564 का नामांतरण श्रीमती दीपाली मिश्र पति श्री विनीत कुमार मिश्र निवासी अरूण नगर रीवा (म.प्र.) के नाम करने की कार्यवाही की जावेगी।

उपायुक्त (राजस्व)
नगर पालिक निगम रीवा (म.प्र.)

विचार

ग्राउंड जीरो पर बाल कल्याण क्षेत्र में 'यूनिसेफ' की भूमिका बेहतरीन

बाल कल्याण की बात हो या उनके अधिकारों की रक्षा, दोनों में प्रहरी की भूमिका निभाती है 'यूनिसेफ'। इसलिए यूनिसेफ का नाम सुनते ही मन-मस्तिष्क में बच्चे ईद गिर्द घूमने लगते हैं। साथ ही उनकी समस्याओं और सुधारी प्रयासों का जिक्र भी होने लगता है। आज 'विश्व यूनिसेफ दिवस' है। एक ऐसी संस्था जो संसार के 190 देशों के बेहद दुर्गम स्थानों पर पहुंचकर कर बच्चों के अधिकारों की हिमायत के लिए मजबूती से लड़ती है। बाल कल्याण की सुविधाएं विश्व के प्रत्येक जरूरतमंद, कमजोर और वंचित बच्चों तक पहुंचे, इसलिए लिए यूनिसेफ की टीमें चौबीसों घंटों ग्राउंड जीरो पर तैनात रहती हैं। यूनिसेफ का मतलब होता है 'संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष' जिसका आरंभ 11 दिसंबर, 1946 को 'संयुक्त राष्ट्र महासभा' द्वारा किया गया था। शुरूआती वक्त में संस्थान में मात्र 43 देश शामिल हुए थे, लेकिन कुछ वर्षों बाद ये संख्या 100 पार कर गई। पर, आज इस संस्था में 190 मुल्क जुड़े हैं। संख्या में धीरे-धीरे इजाफा हो रहा है। यूनिसेफ के 5 लाख प्रतिनिधि इस समय पूरे संसार में कार्यरत हैं। वहीं, भारत में 18 हजार के करीब वर्कर दुर्गम स्थानों पर बाल कल्याण के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। बाल तस्करी की रोकथाम में इनकी अगल से टीमें कार्य करती हैं।

हिंदुस्तान में रोजाना करीब 69,000 बच्चे पैदा होते हैं। उन सभी नौनिहालों के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और बाल संरक्षण में यूनिसेफ इंडिया बेहतरीन कदम उठाने को संकल्पित होता है। मौजूदा समय में यूनिसेफ की टीमें युद्धग्रस्त यूक्रेन-रूस, ईरान-इराक, अफगानिस्तान जैसे मुल्कों में अधिकांश जुटी हैं। वहां अभावग्रस्त बच्चों की परवरिश करने के अलावा उनकी शिक्षा-स्वास्थ्य में लगे हैं। वैसे देखा जाए तो, विश्व को यूनिसेफ़ की कार्यशैली द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तब ज्यादा दिखी, जब इनके योद्धाओं ने बिना अपनी जान की परवाह किए युद्ध से आहत, असहाय, बेघर बच्चों को जरूरती सामानों की आपूर्ति, विभिन्न किस्म की सहायताएं और स्वास्थ्य में सुधार के अभियानों को चलाया। जैसे-जैसे समय बदला, यूनिसेफ़ ने अपनी कार्यशैली में और बदलाव किए। पहले इनका काम सिर्फ बाल अधिकारों की रक्षा के लिए जाना जाता था। लेकिन उसके बाद बच्चों के बेहतर जीवन को बनाने का भी जिम्मा इन्होंने अपने कंधों पर उठा लिया। फिलहाल वक्त में, यूनिसेफ की टीमें माताओं और नवजात शिशुओं के लिए एचआईवी की रोकथाम और उपचार, पर्याप्त पानी, स्वच्छ वातावरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, बाल स्वास्थ्य व पोषण जैसे क्षेत्रों में भी कार्यरत हैं।

बांग्लादेश- कट्टरपंथी जमात के निशाने पर हिंदुओं का जान-माल, सुरक्षा के लिए भारत सरकार करे पहल

दीपक कुमार त्यागी

बांग्लादेश में 5 अगस्त 2024 की दोपहर को हुए शेख हसीना की सरकार के तातपलट के बाद से ही वहां की कट्टरपंथी जहरीली जमात के द्वारा हिंदुओं के जान-माल व मंदिर को चुन-चुन कर के निशान बनाया जा रहा है, इन कट्टरपंथियों के द्वारा हिंदुओं के जान-माल को तब से ही जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। हालांकि तातपलट के बाद बहुत सारे लोगों को यह उमीद थी कि अब देश में नोबेल पुरस्कार प्राप्त मोहमद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार का गठन होने के बाद वहां के हाल धीरे-धीरे पूरी तरह से सुधर जायेंगे। लेकिन अफसोस मोहमद यूनुस तो भारत व हिंदूओं के विरोध में अंधे होकर के खुद इन कट्टरपंथियों की गोद में जाकर बैठ गये हैं और कई माह बीतने के बाद भी बांग्लादेश के हालात सुधरने की जगह और खराब हो गये हैं।

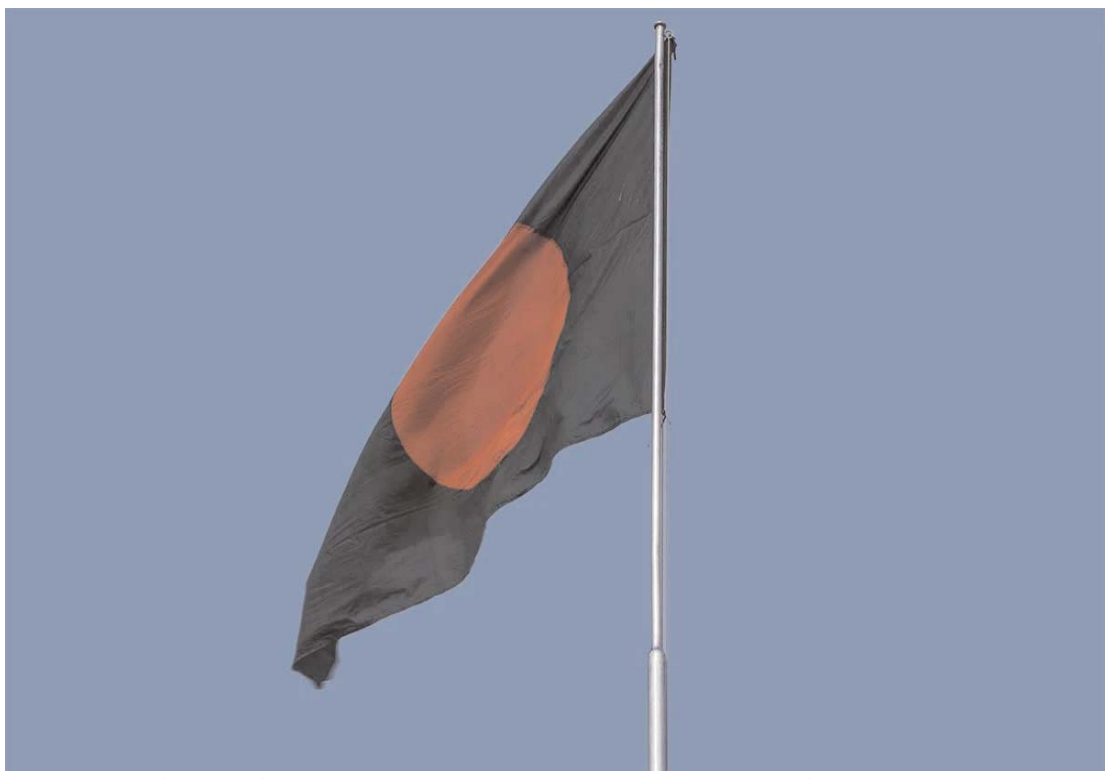

देश व दुनिया के मीडिया के सूत्रों से बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमलें की हजारों की संख्या में जघन्य अपराध वाली घटनाएं घटित हो चुकी हैं, हिंदू इन घटनाओं में अपनी अनमोल जान-माल को गंवा रहे हैं, जो बांग्लादेश के अंदरुनी भयावह हालात के बारे में बताने के लिए काफी हैं। मीडिया स्रोतों से जो खबरें लोगों को निरंतर मिल रही हैं, वह देश व दुनिया के सभी हिंदुओं के साथ-साथ इंसान व इंसानियत को बेहद बुरी तरह से झकझोर देने वाली है। क्योंकि तख्तापलट के बाद से बांग्लादेश में कट्टरपंथियों के द्वारा भारत विरोध व हिंदुओं के जान-माल को जानबूझकर जमकर के निशान बनाया जा रहा है। हिंदुओं को मोहम्मद यूनुस सरकार के संरक्षण प्राप्त इस्लामिक कट्टरपंथियों के द्वारा सरेआम मौत के घाट तक उतारा जा रहा है। वहां हिंदुओं के मंदिर, मकान, दुकान व फेक्ट्रियों आदि को तोड़फोड़ कर के बड़े पैमाने पर आग के हवाले खुलेआम किया जा रहा है और अफसोस की बात यह है कि बांग्लादेश की पुलिस-फोर्स नियम-कायदे व कानून के अनुसार मानवता की रक्षा ना करके खुल्लम-खुल्ला इन भारत व हिंदुओं की विरोधी कट्टरपंथियों की जमात का साथ दे रही है। लेकिन इस हाल में हम भारतवासियों के लिए सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि पूरे विश्व के किसी भी कौने में अगर इस्लाम धर्म के किसी व्यक्ति के साथ किसी अन्य धर्म के व्यक्ति के द्वारा कोई अप्रिय घटना घटित कर दी जाती है, तो हमारे प्यारे देश भारत तक में भी इस्लामिक कट्टरपंथियों के इशारे पर उनके बहुत सारे लोगों को जमकर सड़कों पर बवाल काटते देखा जाता है। लेकिन अब जब बांग्लादेश में हिंदुओं को चुन-चुन कर के निशाना बनाया जा रहा उस वक्त इन लोगों की पूरी जमात की जुबान से एक शब्द भी हिंदुओं की रक्षा की अपील तक के लिए नहीं निकल रहा है, जो स्थिति हम सभी सनातन धर्म के अनुयायियों व देश के सभी नीति-निर्माताओं के लिए चिंताजनक व विचारणीय है।

यहां आपको याद दिला दें कि पूरी दुनिया ने देखा है कि किस तरह से वर्ष 1971 में तत्कालीन भारत सरकार ने पाकिस्तानियों के अत्याचार से बांग्लादेश की जनता को एक अलग राष्ट्र बांग्लादेश का निर्माण करके अत्याचार से मुक्ति दिलाने का कार्य भारतीय सेना के जांबाजों के नेतृत्व में ही किया था, जिसके चलते ही भारत के लंबे समय से बांग्लादेश से मधुर संबंध रहे हैं। लेकिन मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में वहां की अंतरिम सरकार के बनने के बाद भारत-बांग्लादेश के संबंधों में बहुत तेज़ी के साथ कड़वाहट शुरू हुई है। संबंध खराब करने के लिए रही-सही कसर पाकिस्तान के इशारे पर बांग्लादेश के इस्लामिक कट्टरपंथियों के द्वारा हिंदुओं को निशाना बनाकर पूरी की जा रही है। जिस बेहद तनावपूर्ण स्थिति के चलते ही संत चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के बाद अब दोनों देशों के बीच काफ़ी तल्ख़ कूटनीतिक भाषा का इस्तेमाल हो रहा है, जो स्थिति आने वाले समय में भारत-बांग्लादेश के संबंधों व वैश्विक स्तर पर ठीक नहीं है।

यहां आपको एकबार फिर से याद दिला दें कि बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के पतन के बाद से ही भारत विरोधी गतिविधियां और हिंदुओं पर हमले के मामले बहुत तेजी से बढ़े हैं। जिसके बाद से ही बांग्लादेश का हिंदू समुदाय अपनी सुरक्षा करने की मांग को लेकर व हमले के दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग को लेकर के पूरे बांग्लादेश में जगह जगह छोटे-बड़े विरोध प्रदर्शन निरंतर कर रहा है। जिन प्रदर्शनों में हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास बढ़-चढ़कर के भाग ले रहे थे और वह पूरे बांग्लादेश में घूम-घूमकर अत्याचार के खिलाफ हिंदुओं को संगठित कर रहे थे और भारत व दुनिया से बांग्लादेश के हिंदुओं की सुरक्षा करने की मांग कर रहे थे, जिसके चलते ही हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस सरकार की आंखों का कांटा बने हुए थे, जिस वजह से ही हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास को बांग्लादेश सरकार के इशारे पर गिरफ्तार कर लिया गया था और वहां के न्यायालय में हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास की आवाज़ उठाने वाले अधिवक्ता पर भी जानलेवा हमला करके व उसके चैंबर में तोड़फोड़ करके उसको भी निशाना बनाया गया था।

वहीं बांग्लादेश के मुद्दे पर हाल ही में एक नियमित प्रेस ब्रीफिंग में सवाल पूछें जाने पर अमेरिकी विदेश विभाग के उप प्रवक्ता वेदांत पटेल ने कहा था कि - हम इस बात को लेकर स्पष्ट हैं कि मौलिक स्वतंत्रता का सम्मान होना चाहिए। सरकारों को कानून के शासन का सम्मान करने की आवश्यकता है, उन्हें आधारभूत मानवाधिकारों का सम्मान करने की आवश्यकता है। हम इस बात पर हमेशा जोर देते रहेंगे। किसी भी तरह का विरोध शांतिपूर्ण होना चाहिए। हम इस बात पर बल देते हैं कि हिरासत में लिए गए लोगों को भी उचित प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए और उनसे अधारभूत मौलिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के अनुरूप व्यवहार किया जाना चाहिए। हालांकि उनका यह बयान औपचारिकता मात्र है, हालांकि उनके इस बयान में भी बांग्लादेश के हिंदुओं की सुरक्षा के लिए कोई ठोस आश्वासन या समाधान नज़र नहीं आता है, उनका बयान केवल एक औपचारिकता मात्र है।

वहीं हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के बाद बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने भी बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यूनुस पर जोरदार हमला करते हुए कहा कि उन्होंने बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों को रोकने में नाकामयाबी दिखाई है, शेख हसीना ने मोहम्मद यूनुस पर आरोप लगाया कि उन्होंने हिंदुओं के नरसंहार में सक्रिय रूप से भाग लिया है। शेख हसीना के इस बयान को दुनिया भर के ठेकेदार बनने वाले ताकतवर देशों व मानवाधिकार संगठनों को संज्ञान लेकर के हिंदुओं के नरसंहार को रोकने के लिए मोहम्मद यूनुस सरकार के खिलाफ वैश्विक स्तर पर कार्रवाई करनी चाहिए, जो पर अभी तक तो कोई पहल होती हुई नज़र नहीं आ रही है।

हालांकि भारत सरकार भी बार-बार बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को विभिन्न फोरम पर उठाने का कार्य निरंतर कर रही है, लेकिन उसके बाद भी बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर कट्टरपंथियों की जमात के द्वारा जबरदस्त अत्याचार जारी हैं और हमारे देश के धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदार बन चुके लोगों की जमात इस बेहद ज्वलंत मुद्दे पर चुपचाप बैठकर के अब भी तमाशा देख रही है, वह जम्मू-कश्मीर के हिंदुओं की तरह ही बांग्लादेश हिंदुओं को भी तिल-तिल कर मरते हुए देख रही है, जो बांग्लादेश चंद माह पहले छात्रों के हिंसक आंदोलन में जल रहा था, वहां तख्तापलट के तुरंत बाद से ही भारत व हिंदुओं के ऋणों को भूलकर के छात्रों का यह हिंसक आंदोलन हिंदू विरोधी आंदोलन में अचानक कैसे तब्दील हो गया है, देश व दुनिया के विशेषज्ञों को इस स्थिति का निष्पक्ष रूप से आंकलन करने चाहिए कि आखिरकार किस के उकसावे पर बांग्लादेश में अचानक से स्थिति भारत व हिंदूओं के विरोधी कैसे हो गयी। विचारणीय यह है कि आरक्षण के विरोध की आग में झुलसता हुए बांग्लादेश अचानक से भारत व हिंदू विरोध की आग में कैसे झुलसा। तख्तापलट के बाद भी हिंसा आज भी अनवरत रूप से जारी है, लेकिन अब दंगा-फसाद में चिन्हित करके हिंदुओं को मौत के घाट उतारना जारी है। हिंदुओं की सुरक्षा की दृष्टि से पूरे बांग्लादेश में जबरदस्त अस्थिरता का माहौल व्याप्त है, मीडिया सूत्रों के अनुसार दंगाईयों को मोहम्मद यूनुस सरकार के द्वारा सरकारी संरक्षण मिलने के चलते हिंदुओं के जान-माल की भारी क्षति होना अब भी निरंतर जारी है। जिसके चलते बांग्लादेश के हिंदुओं के साथ-साथ पूरी दुनिया के हिंदू अब भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री एस. जयशंकर प्रसाद के साथ-साथ एनएसए अजीत डोभाल की तरफ बांग्लादेश के हिंदुओं की सुरक्षा करने की उम्मीद से देख रहे हैं, उन्हें उम्मीद है कि भारत सरकार अब बयानबाज़ी से इतर होकर के धरातल पर ठोस कदम उठाकर के तत्काल बांग्लादेश में भारत विरोधी सभी गतिविधियों व हिंदुओं के नरसंहार पर नकेल कसेगी।

इंडिया गठबंधन की रार से कांग्रेस से ज्यादा क्षेत्रीय दलों को होगा नुकसान

कमलेश पांडे

कांग्रेस के नेतृत्व वाले %इंडिया गठबंधन% में नेतृत्व के सवाल पर जो मौजूदा चिल्ह-पों मची हुई है और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व पर एक बार फिर से जो सवाल उठाए जा रहे हैं, उससे न तो तृणमूल कांग्रेस नेत्री व पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का राजनीतिक भला होने वाला है और न ही उनकी सुर में सुर मिलाने वाले एनसीपी शरद पवार के शरद पवार-सुप्रिया सुले, शिवसेना यूबीटी के उद्धव ठाकरे-आदित्य ठाकरे, समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव-रामगोपाल यादव या आप पार्टी के अरविंद केजरीवाल आदि जैसे नेताओं का। हां, इससे कांग्रेस आई की उस सियासी साख को धक्का अवश्य लगेगा, जो कि बमुश्किल उसने राहुल गांधी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव 2024 के बाद हासिल कर पाई है।

राजनीतिक मामलों के जानकारों का स्पष्ट कहना है कि कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी के लिए हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा की हार जरूर मायने रखती है, क्योंकि यह जीती हुई बाजी हारने के जैसा है। लेकिन सिर्फ इसको लेकर ही इंडिया गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस से छीन लेना कोई राजनीतिक बुद्धिमानी का काम प्रतीत नहीं होता है। शायद कांग्रेस भी इसे नहीं मानेगी और किसी भी राष्ट्रीय दल को क्षेत्रीय दलों के सामने घुटने भी नहीं टेकने चाहिए, यदि सत्ता प्राप्ति के लिए संख्या बल का खेल नहीं हो तो! बीजेपी भी यही करती है और अपने गठबंधन सहयोगियों को उनकी वाजिब औकात में रखती है। तीसरे-चौथे मोर्चे की विफलता के पीछे भी तो अनुशासनहीनता या अतिशय महत्वाकांक्षा का खेल ही तो था, जिसे बहुधा राजनीतिक रोग समझा जाता है।

बता दें कि तृणमूल कांग्रेस नेता कल्याण बनर्जी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का परिणाम आने के बाद तुरंत कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन के नेता के रूप में मान्यता देनी चाहिए। इसके बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी हालिया हरियाणा और महाराष्ट्र चुनाव में इंडिया ब्लॉक के खराब प्रदर्शन पर असंतोष जाहिर किया और संकेत दिया कि अगर मौका मिला तो वह इंडिया ब्लॉक की कमान संभालने के लिए तैयार हैं।

तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो ने यहां तक कहा कि वह बंगाल की मुख्यमंत्री के रूप में अपनी भूमिका जारी रखते हुए भी विपक्षी मोर्चे को चलाने की दोहरी जिम्मेदारी संभाल सकती हैं। एक टीवी चैनल से बात करते हुए ममता बनर्जी ने कहा, मैंने इंडिया ब्लॉक का गठन किया था, अब मोर्चा का नेतृत्व करने वालों पर इसका प्रबंधन करने की जिम्मेदारी है। अगर वे इसे नहीं चला सकते, तो मैं क्या कर सकती हूं? मैं सिर्फ इतना कहूंगी कि सभी को साथ लेकर चलना होगा। वहीं, यह पूछे जाने पर कि एक मजबूत भाजपा विरोधी ताकत के रूप में अपनी साख के बावजूद वह इंडिया ब्लॉक की कमान क्यों नहीं संभाल रही हैं? तो इस पर बनर्जी ने कहा, अगर मौका मिला तो मैं इसके सुचारू संचालन को सुनिश्चित करूंगी। उन्होंने कहा, मैं बंगाल से बाहर नहीं जाना चाहती, लेकिन मैं इसे यहीं से चला सकती हूं।

बता दें कि बीजेपी का मुकाबला करने के लिए गठित इंडिया ब्लॉक में दो दर्जन से अधिक विपक्षी दल शामिल हैं। हालांकि, आंतरिक मतभेदों और

आपसी तालमेल की कमी की वजह से इसकी कई बार आलोचना भी होती रही है। इसी वजह से इसके प्रमुख सूत्रधार रहे जदयू नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपना पाला बदल लिया और भाजपा के खेमे में चले गए। वो भी इंडिया गठबंधन के संयोजक का पद पाना चाहते थे, जो लालू प्रसाद के परोक्ष विरोध के चलते सम्भव नहीं हो पाया। ऐसे में संभव है कि ममता भी एकबार फिर से तीसरे मोर्चे को मजबूत करने की पहल करें और नीतीश की तरह ही इंडिया गठबंधन को टा-टा, बाय-बाय कर दें।

उल्लेखनीय है कि ममता बनर्जी का यह बयान उनकी पार्टी सांसद कल्याण बनर्जी द्वारा कांग्रेस और अन्य इंडिया ब्लॉक सहयोगियों को लेकर दिए बयान के बाद सामने आया है। तब कल्याण बनर्जी ने कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन के नेता के रूप में मान्यता देनी चाहिए। आपको बता दें कि बीजेपी ने जहां महाराष्ट्र में शानदार प्रदर्शन करते हुए रिकॉर्ड संख्या में सीटें हासिल कीं तो वहीं कांग्रेस का प्रदर्शन बेहद खराब रहा। बीजेपी के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन को भारी जीत मिली, जबकि इंडिया ब्लॉक ने सिर्फ झारखंड में जेएमएम के शानदार प्रदर्शन की बदौलत मजबूत वापसी की। कहने का तातपर्य यह है कि कांग्रेस ने अपनी हार का सिलसिला जारी रखा और हरियाणा के बाद महाराष्ट्र में भी अपना सबसे खराब प्रदर्शन किया और झारखंड में सत्तारूढ़ जेएमएम के जूनियर पार्टनर के रूप में सामने आई और विपक्षी ब्लॉक में इसकी भूमिका और भी कम हो गई क्योंकि अन्य सहयोगियों ने इससे बेहतर प्रदर्शन किया।

वहीं, दूसरी ओर हाल ही में हुए उपचुनावों में भाजपा को हराकर टीएमसी की जीत ने पश्चिम बंगाल में पार्टी के प्रभुत्व को मजबूत किया है, जबकि विपक्षी अभियान आरजी कर मेडिकल कॉलेज विरोध जैसे विवादों पर केंद्रित थे। सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे, उसके सहयोगी सीपीआई (एमएल) लिबरेशन और कांग्रेस, जो इंडिया ब्लॉक में राष्ट्रीय स्तर पर टीएमसी के सहयोगी हैं, सभी को बड़ी असफलताओं का सामना करना पड़ा और उनके उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। जबकि कांग्रेस इंडिया ब्लॉक की सबसे बड़ी पार्टी है, जिसे अक्सर गठबंधन का वास्तविक नेता माना जाता है। यही वजह है कि टीएमसी ने लगातार ममता बनर्जी को गठबंधन की बागडोर संभालने की वकालत की है।

तम्बाकू नियंत्रण के लिए कलेक्टर ने जिला स्तरीय समन्वय समिति की ली बैठक

तंबाकू नियंत्रण के लिए जिले में कोटपा एक्ट 2003 लागू उल्लंघन की स्थिति पर होगी कार्यवाही

सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करने वालों पर होगी कार्यवाही

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत कलेक्टर डी. राहुल वेंकट की अध्यक्षता में तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम जिला स्तरीय समन्वय समिति का बैठक कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित किया गया। इस बैठक में समस्त अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार, मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं समस्त विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अविनाश खरे द्वारा तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत जिले में की जा रही गतिविधियों के सम्बंध में अवगत कराया गया। तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम की जिला नोडल अधिकारी डॉ. कृति चौहान द्वारा तम्बाकू नशा मुक्ति केंद्र की सेवाओं के बारे में बताया गया। बैठक में ब्लूमबर्ग परियोजना के सम्भागीय सलाहकार प्रकाश श्रीवास्तव द्वारा राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम, कोटपा एक्ट 2003, कोटपा छत्तीसगढ़ संशोधन अधिनियम 2021 तम्बाकू मुक्त शैक्षणिक संस्था, किशोर न्याय अधिनियम एवं धूम्रपान मुक्त नितियों से सम्बंधित विस्तृत चर्चा की गई। तंबाकू एवं तंबाकू उत्पादों के उपयोग एवं उपभोग को हतोत्साहित करने एवं कोटपा एक्ट 2003 के प्रभावी अनुपालन हेतु जिले में राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम संचालित है।

उन्होंने आगे बताया कि जिले में तम्बाकू नियंत्रण की नीतियों के प्रभावी अनुपालन हेतु राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत ब्लूमबर्ग परियोजना छ.ग. के माध्यम से 13 दिसम्बर 2024 को प्रातः 10:30 बजे से स्थान होटल हसदेव इन, मनेन्द्रगढ़ में एक दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है। इस प्रशिक्षण में आपके विभाग से तम्बाकू नियंत्रण हेतु नामांकित जिला नोडल अधिकारी एवं 10 उपनिरीक्षकों को निर्धारित समयावधि में उपस्थिति हेतु निर्देशित करने के लिए कहा है। इस बैठक के अंत मे कलेक्टर द्वारा जिले में तम्बाकू नियंत्रण के लिए प्रभावी कानूनों का अनुपालन सुनिश्चित किए जाने निर्देशित किया। जिले के सभी सार्वजनिक स्थानों, कार्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थाओं के पास सिगरेट एवं तम्बाकू उत्पादों के उपयोग को प्रतिबंधित करते हुए निरंतर चलानी कार्यवाही, जिले के समस्त कार्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों को तंबाकू मुक्त करने के निर्देश दिए गए।

क्या है कोटपा एक्ट 2003 की धारा: कोटपा एक्ट अधिनियम के अंतर्गत निम्न प्रावधान किए गए हैं जिसमें धारा-4 सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान पर प्रतिबंध। यदि कोई इस प्रावधान का उल्लंघन करता है तो उसे 200 रुपए तक का जुर्माना लगाया जाएगा। धारा-5 सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पादों के विज्ञापन पर प्रतिबंध। पहले अपराध पर 1,000 रुपए तक का जुर्माना या 2 वर्ष तक का कारावास या दोनों का प्रावधान है। यदि अपराध दोहराया जाता है, तो 5,000 रुपए तक का जुर्माना या 5 वर्ष तक का कारावास या दोनों का दंड दिया जा सकता है।

धारा-6 अठारह वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों को तंबाकू उत्पाद बेचना और निर्धारित क्षेत्र में तंबाकू उत्पादों की बिक्री पर प्रतिबंध। इस उल्लंघन पर 200 रुपए तक का जुर्माना लगाया जाएगा। धारा-7, 8 और 9 बिना वैधानिक चेतावनी के सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पादों की बिक्री पर प्रतिबंध है। यदि विनिर्माता ऐसा करता है, तो पहले अपराध पर 5,000 रुपए तक का जुर्माना या 2 वर्ष तक का कारावास या दोनों हो सकता है। यदि अपराध दोहराया जाता है, तो 10,000 रुपए तक का जुर्माना या 5 वर्ष तक का कारावास या दोनों का प्रावधान है। खुदरा विक्रेता के लिए, पहले अपराध पर 1,000 रुपए तक का जुर्माना या 1 वर्ष तक का कारावास या दोनों हो सकता है, जबकि दोहराने पर 3,000 रुपए तक का जुर्माना या 2 वर्ष तक का कारावास या दोनों का प्रावधान है।

किशोर न्याय अधिनियम की धारा-77 के तहत बालक बच्चों को मादक पदार्थ या तंबाकू उत्पाद का सेवन कराने पर 7 वर्ष तक की कठोर कैद और 1 लाख रुपए तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। भारतीय दंड संहिता की धारा-268 के अनुसार यदि कोई व्यक्ति सार्वजनिक उपद्रव फैलाता है, जिससे जनता को सामान्य चोट, असुविधा या परेशानी होती है, तो उसे 200 रुपए तक का जुर्माना लगाया जाएगा। धारा-269 के तहत, यदि कोई व्यक्ति खतरनाक बीमारी के संक्रमण को फैलाने वाली लापरवाही करता है, तो उसे 6 महीने तक की जेल, जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं।

धारा-278 के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वातावरण बनाता है, तो उसे 500 तक का जुर्माना देना होगा। खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 (एफएसएसए, 2006) के तहत, खाद्य और मानक (बिक्री पर प्रतिबंध और प्रतिबंध विनियम, 2011 का विनियम 2, 3 और 4 के तहत किसी भी खाद्य उत्पादन में तंबाकू और निकोटीन का उपयोग करना पूरी तरह से प्रतिबंधित है। इस उल्लंघन पर एफएसएसए, 2026 की 57(1)(आईआई) के तहत अधिकतम 10 लाख रुपए तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इस राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत इन अधिनियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया गया है।

कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में मनाया गया झंडा दिवस

सैनिकों के परिजनों और उनके आश्रितों की देखभाल करना देश के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी : कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। सशस्त्र सेना झंडा दिवस भारतीय सेना की बहादुरी, त्याग व समर्पण के सम्मान में एवं वीर शहीदों की स्मृति के लिए हर वर्ष 07 दिसंबर को झंडा दिवस मनाया जाता है। इसी उपलक्ष्य में आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बड़े ही हर्ष के साथ झंडा दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कमांडर रणजीत सिंह बिष्ट द्वारा कलेक्टर डी. राहुल वेंकट तथा अन्य अधिकारियों-कर्मचारियों एवं आम नागरिकों को सशस्त्र सेना ध्वज प्रतीक लगाकर की गई।

इस दौरान कमांडर रणजीत सिंह बिष्ट ने सभी नागरिकों से अपील की कि देश की संप्रभुता और अखंडता की रक्षा हेतु शहीद सैनिकों की विधवाओं, भूतपूर्व सैनिकों, और सेना में सेवारत सैनिकों व उनके आश्रितों के पुनर्वास एवं कल्याणकारी योजनाओं के लिए उदारता से दान दें। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने नागरिकों से इस नेक पहल में उदारता व मुक्तहस्त से सहयोग देने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हमारे देश की सुरक्षा के लिए शहीद हुए सैनिकों के परिजनों और उनके आश्रितों की देखभाल करना देश के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

आगे कमांडर रणजीत सिंह बिष्ट ने पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से झंडा दिवस के महत्व और उसकी गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि झंडा दिवस का उद्देश्य हमारी पराक्रमी सेना के प्रति आभार व्यक्त करना और उनकी कल्याणकारी योजनाओं में सहयोग देना है। झंडा दिवस पर एकत्रित धनराशि का उपयोग वीर नारियों, भूतपूर्व सैनिकों, विधवाओं एवं उनके आश्रितों की सहायता हेतु किया जाता है। इस अवसर पर कलेक्टर ने सैनिक कल्याण बोर्ड के प्रति आभार व्यक्त किया। साथ ही अशोक कोस्टा ने इस पावन अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि, अधिकारीगण, पूर्व सैनिक, उनके परिजनों और सभी जनों का धन्यवाद दिया।

इस कार्यक्रम में सैनिक कल्याण संयोजक सुरेश सोनी, जे.सी मंडल अधीक्षक, अपर कलेक्टर अनिल सिदार, एसडीएम मनेन्द्रगढ़, एसडीएम खड़गवां, तहसीलदार मनेन्द्रगढ़, तहसीलदार चिरमिरी, नगर निगम आयुक्त, जिला शिक्षा अधिकारी, जनपद सीईओ एमसीबी, जनपद सीईओ खड़गवां और सभी नगर पंचायत सीएमओ सहित बड़ी संख्या में अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

नगर निगम चिरमिरी के कर्मचारी अनिश्चिकालीन हड़ताल पर

मीडिया ऑडीटर, चिरिमिरी निप्र। नवयुक्त अधिकारी कर्मचारी कल्याण संघ के बैनर तले छत्तीसगढ़ 184 निकायों के कर्मचारी 6 सूत्रीय मांगों को लेकर 11 दिसंबर 24 से तूता रायपुर में अनिश्चिकालीन हड़ताल पर चले गए। कर्मचारियों की मुख्य मांगों में निकाय के कर्मचारियों को ट्रेजरी के माध्यम से वेतन भुगतान करने, ओल्ड वेतन योजना लागू करने, अनुकंपा नियुक्ति प्रदान करने, 10 वर्ष की सेवा पूर्ण होने पर कर्मचारियों की पदोन्नति करने, 8वें व 7वें वेतनमान एरियर राशि भुगतान करने, नगरीय निकाय में ठेका पद्धति समाप्त करने शामिल है इसके पूर्व ही दिनांक 12 नवंबर से 14 नवंबर 2024 तक 6 सूत्रीय मांगो को लेकर निकाय के कर्मचारी बिलासपुर में हड़ताल कर चुके थे। पर शासन के द्वारा सिर्फ आश्वाशन ही मिला। उसके बाद आज तक शासन ने कोई हमारी माँगो पर ठोस कार्य वाही नही की, न ही मांगे पूरी की गयी।

संघ के जिला स्तर के पदाधिकारियो ने बताया कि शासन 6 सूत्रीय मांगो पर कोई विचार नहीं कर रहा है सिर्फ आश्वासन दे रहा है। नगरीय निकाय के कर्मचारी आगामी नगरीय निकाय चुनाव में कोई भी कर्मचारी या परिवार के सदस्य मतदान में भाग नहीं लेगे। इस संबंध में कर्मचारियों से चुनाव में भाग में नहीं लेने संबंधी प्रपत्र भरवाया गया है जिसे निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ एवं विभागीय मंत्री नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग को भी पत्र प्रेषित किया गया है। वर्तमान में कई नगरीय निकायों में 2 से 4 माह का वेतन भुगतान लंबित है। इस संबंध में राज्य शासन द्वारा नगरीय निकायों में 1 तारिख को वेतन भुगतान किये जाने हेतु आदेश भी प्रसारित किया गया है किन्तु नगरीय निकायों के अधिकारी आदेश का पालन सुनिश्चित नहीं कर पा रहे है। साथ ही चिरिमिरी नगर पालिक निगम के अधिकारी व कर्मचारी संघ ने भी नवयुक्त अधिकारी कर्मचारी संघ के के बैनर तले छत्तीसगढ़ 184 निकायों के कर्मचारी 6 सूत्री मांगों को लेकर 11 दिसंबर से तूता रायपुर में अनिश्चितकालीन हड़ताल के समर्थन में समस्त नियमित एवं प्लेसमेंट कर्मचारियों के द्वारा 11 दिसंबर से सफाई पानी बिजली बंद कर और अनिश्चित कालीन हड़ताल की शुरुआत की गयी।

इस संबंध में नवयुग अधिकारी कर्मचारी संघ के प्रदेश प्रवक्ता विकास मिश्रा संभाग अध्यक्ष संजय पांडे प्रदेश उपाध्यक्ष पवन साहू जिला अध्यक्ष पांचू राम साहू जिला महामंत्री पद्मा राव मीडिया प्रभारी अनूप वर्मा एवं आनंद किंडो वरिष्ठ अभियंता विजय वधावन,श्याम देशपांडे के द्वारा नियमित वेतन की व्यवस्था होने तक निकाय के सभी मूलभूत सुविधाएं बाधित रहेगी और संघ के आवाहन पर सभी अधिकारी कर्मचारी प्लेसमेंट द्वारा अनिश्चितकालीन हड़ताल में रहने का निर्णय लिया गया है। और दिनाँक 11 दिसंबर से संघ के अंतरिम आदेश तक समस्त अधिकारी व कर्मचारी हड़ताल कर अपने संघ का समर्थन कर रहे है।

अरपा की बदहाली नहीं हुई दूर

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर जिले में अरपा की बदहाली का मुद्दा सियासी पार्टियों को चुनावी नैया पार कराते रहा, लेकिन उसकी दुर्दशा दूर नहीं हुई। 7 साल पहले ने उद्गम के संरक्षण, कचरा, मलबा और नदी में गंदे पानी का बहाव रोकने के लिए रचनात्मक पहल की। मैदानी स्तर पर सभी पार्टी के नेताओं, समाजसेवी, बुद्धीजीवियों, आम नागरिकों को अरपा रपटा पर एक मंच पर लाकर संकल्प कराया। उसके बाद तत्कालीन भाजपा और उसके बाद कांग्रेस की सरकार ने उद्गम के संरक्षण की घोषणा की पर योजनाओं की कागजी दौड़ अब तलक चल रही है, उसे मुकाम हासिल नहीं हुआ। गौरतलब है कि, अरपा की दारूण दशा परं निरंतर प्रकाशित खबरों के आधार पर 5 साल पहले हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की गई।

जमीन विवाद में फायरिंग,महिला पर तानी बंदूक

गेट का ताला तोड़कर की हाथापाई, पटवारी के साथ पहुंचे थे सरकारी कर्मचारी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर में जमीन विवाद में फायरिंग की गई है। एक व्यक्ति ने महिला पर लाइसेंसी बंदूक तानी, फिर हवाई फायर कर दिया। वारदात की सूचना मिलते ही पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं मौके पर फोरेंसिक की टीम भी पहुंची हुई है। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र के रवि नगर का है। सिविल लाइन सीएसपी अजय कुमार के मुताबिक, फजिया मेमन ने रवि नगर रोड पर जमीन खरीदी थी। पटवारी और अन्य सरकारी कर्मचारियों के साथ वे जमीन का सीमांकन कराने पहुंची थी। इसी दौरान सुबह करीब साढ़े 10 बजे हरदयाल सिंह ने खुद को जमीन का मालिक बताया। फिर बाउंड्रीवाल के गेट पर लगे ताले को तोड़ दिया। विवाद बढ़ने पर दोनों पक्षों के बीच हाथापाई की नौबत आ गई।

लाइसेंसी बंदूक से किया फायर: पुलिस को पूछताछ में पता चला है कि, हाथापाई के बाद हरदयाल घर से बंदूक लेकर आया और हवाई फायरिंग कर दी। दूसरे पक्ष के लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची सिविल लाइन पुलिस ने आरोपी हरदयाल को हिरासत में ले लिया। आरोपी के पास से दो नाली बंदूक और एक जिंदा कारतूस भी जब्त किया गया है।

पटवारी समेत करीब दर्जनभर लोग थे मौजूद: बताया जा रहा है कि, इस घटना के दौरान मौके पर करीब दर्जन भर लोग मौजूद थे जिसमें पटवारी और कुछ सरकारी कर्मचारी भी थे जो सीमांकन के लिए पहुंचे थे। इसके अलावा झड़प की स्थिति बनते ही दोनों पक्षों से भी लोग इकट्ठे हो गए। फिलहाल सिविल लाइन पुलिस दोनों पक्षों से पूछताछ कर रही है।

आरोपी बोला- भाई ने जमीन बेची, मैंने नहीं: पुलिस के मुताबिक आरोपी हरदयाल का कहना है कि ये जमीन दो भाइयों की है। उसके भाई ने अपने जमीन का हिस्सा बेचा होगा लेकिन, उसने जमीन नहीं बेची है। गेट पर ताला लगाया गया था उसे फजिया ने तोड़ दिया था।

बाघ का विचरण, गाय को बनाया अपना शिकार

मीडिया ऑडीटर, चिरमिरी निप्र। नगर निगम चिरमिरी के वार्ड क्रमांक 1 के ग्राम मोहरीडांड में बाघ को विचरण करते हुए देखा गया है।जानकारी के अनुसार मनेंद्रगढ़ वनपरीक्षेत्र के ग्राम भौता में पिछले दो दिनों से बाघ विचरण कर रहा था जंगल के रस्ते होते हुए चिरमिरी वनपरिक्षेत्र ग्राम मोहरी डांड के जंगल में विचरण कर रहा है वहीं बाघ ने रात्रि करीब एक बजे ग्रामीण के घर के बना हुआ खड़का से एक मवेशी को अपना शिकार बनाया है। जैसे ही इस बात की जानकारी वन विभाग को मिली वन आमला अपने टीम के साथ घटना स्थल में पहुंची और ग्रामवासियों को मुनादी के माध्यम से समझाइश दे हुए देखा गया। वही ग्रामीणों ने बताया कि बाघ मवेशी का शिकार करके अभी निद्रा अवस्था में हैं और वन विभाग के अधिकारी हमें घर खाली कर किसी दूसरे स्थान में जाने को बोल रहे हैं ताकि किसी प्रकार की घटना घटित न हो सके। वहीं बताया ये भी जा रहा है कि बाघिन गभीन हैं रात्रि के समय विचरण करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान निकल जाती अभी तक किसी अप्रिय घटनाओं को अंजाम देते नहीं देखा गया है।

अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस मनाया गया

मीडिया ऑडीटर, चिरमिरी निप्र। अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार एसोसिएशन एम .सी बी .के तत्वाधान में स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी विद्यालय चिरमिरी में अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस मनाया गया कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलन कर किया गया । तत्पश्चात अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार एसोसिएशन के पदाधिकारीयों का विद्यालय परिवार द्वारा स्वागत किया गया । इस अवसर पर छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को मानव के अधिकार एवं कानूनी सुरक्षा की जानकारी विस्तृत रूप से अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष राकेश कुमार महौत ने दिया उन्होंने बताया कि व्यक्ति के जन्म लेते ही उसे अधिकार प्राप्त हो जाते हैं हर हर व्यक्ति को जागरुक होकर अपने अधिकारों की जानकारी रखनी चाहिए तथा अधिकारों से संबंधित कानूनी पहलू का भी ज्ञान व्यक्ति को रखना चाहिए इस अवसर पर संस्था के प्राचार्य डॉ0 डी 0 के 0उपाध्याय ने भी विद्यार्थियों को मानव के अधिकार एवं कर्तव्य के प्रति सचेत किया। कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार एसोसिएशन के पदाधिकारी गण सर्व श्री राकेश महौत प्रदेशाध्यक्ष छ.ग , विनोद पांडे जिला अध्यक्ष एम .सी .बी .श्रीमती पुष्पा गुलकारी (अधिवक्ता), सुश्री सरणजीत कौर (अधिवक्ता),देवदास संभाग महा सचिव ,सुधाकर महाराणा प्रदेश संगठन सचिव ,जयराम सिंह प्रदेश संगठन सचिव , टी .पी सिंह शिक्षक, विजय विश्वकर्मा ,विकास कुमार उपस्थित थे कार्यक्रम के अंत में मानव अधिकार एसोसिएशन के द्वारा विद्यार्थियों को पेन,बिस्कुट और चॉकलेट का वितरण किया गया ।

गर्लफ्रेंड को खेत में गाड़ा फिर कब्र पर बो दिया धान

नाबालिग ने बॉयफ्रेंड के घर की खुदकुशी, लाश दफनाने में भाई-चाचा शामिल रहे

मीडिया ऑडीटर, जशपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के जशपुर में बॉयफ्रेंड ने गर्लफ्रेंड की लाश को खेत में दफनाकर उसके ऊपर धान बो दिया। दरअसल, 5 महीने से लापता 16 साल की नाबालिग लड़की का शव महुआटोली गांव के खेत में मिला है। वारदात की वजह प्रेम त्रिकोण के कारण हुआ विवाद रही। नाबालिग ने प्रेमी के मकान में खुदकुशी कर ली थी। जिसके बाद प्रेमी ने 2 रिश्तेदारों के साथ मिलकर लाश को अपने खेत में ही दफना दिया। और फिर उसके ऊपर धान की रोपाई कर दी। जानकारी के अनुसार 6 अगस्त 2024 को दुलदुला थाना क्षेत्र के एक गांव में नाबालिग अपने जीजा के घर आई हुई थी, जो दूसरे दिन रात को अचानक गायब हो गई। बाद में फोन करने पर बालिका ने अपनी सहेली के यहां होना बताया।

परिजनों ने दुलदुला थाने में दर्ज कराई गुमशुदगी: जिसके बाद घरवाले निश्चित हो गए की उनकी बेटी सुरक्षित परिचित के घर पर है। जब एक माह बीतने के बाद लड़की घर नहीं लौटी तो परिजनों ने सितंबर में दुलदुला थाने में नाबालिग के अपहरण की शिकायत दर्ज कराई।

जांच में नाबालिग के प्रेम प्रसंग का पता चला: एसपी शशिमोहन सिंह ने एक टीम गठित की। जांच के दौरान पुलिस को लोगों से बातचीत और फोन डिटेल से पता चला कि लापता लड़की का प्रेम प्रसंग कुनकुरी थाना क्षेत्र के महुआटोली गांव के युवक हेमंत प्रधान (21) से चल रहा था। आगे जांच में पता चला कि युवक हैदराबाद में है। जशपुर पुलिस ने युवक को हैदराबाद में खोज निकाला।

गर्लफ्रेंड ने दूसरी लड़की से बात करते देख लिया: पूछताछ में हेमंत ने बताया कि उसका खेत के पास मकान है।

सरकार के एक साल पूर्ण होने पर समस्त विभाग एक साल की उपलब्धियों की जानकारी दें : कलेक्टर

आयुष्मान सहित जाति, आय, एवं निवास प्रमाण पत्रों को शत-प्रतिशत पूर्ण करें

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय के सभा कक्ष में साप्ताहिक समय-सीमा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विभिन्न बिंदुओं की समीक्षा की गई, जिसमें विभागीय महत्वपूर्ण पत्रों, पिछले शिविर के लंबित मुद्दों, डीएमएफ कार्यों की प्रगति तथा आगामी बैठक में शामिल होने वाले प्रस्तावों पर चर्चा की गई और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

9 दिसंबर को माननीय मुख्यमंत्री जी का कार्यक्रम चिरमिरी में सम्पन्न हुआ। इसके लिए कलेक्टर ने राजस्व विभाग तथा पुलिस विभाग सहित कार्यक्रम की सहभागिता करने वाले समस्त विभागों को धन्यवाद देते हुए कहा कि सभी के सहयोग से कार्यक्रम गरिमामय पूर्ण तरीके से सम्पन्न हुआ। इसके लिए सभी को बधाई दी। इसके बाद कलेक्टर ने राज्य शासन के एक साल पूर्ण होने पर समस्त विभागों को एक साल की उपलब्धियों की जानकारी उपलब्ध कराने के निर्देश दिये।

कलेक्टर ने जिले में नगर निगम, नगर पंचायत, नगर परिषद और ग्राम पंचायत चुनाव की प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए सभी एसडीएम, जनपद सीईओ, सीएमओ और तहसीलदारों को निर्देशित किया कि सभी मतदान केंद्रों पर बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करे, इसके अतिरिक्त स्ट्रांग रूम की व्यवस्था, साफ सफाई, पेयजल की व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था करने के निर्देश दिये। उन्होंने विधायक निधि को कार्यों को प्राथमिकता के साथ प्रारम्भ करने के निर्देश दिये। उन्होंने ग्रामीण अवसंरचना विकास निधि से बनने वाले गोदाम की जानकारी लेते हुए गोदामों के लिए जमीन का चिन्हांकन करने के निर्देश दिये। श्रम विभाग को कम दाम में मजदूरों को खाना उपलब्ध कराने कैंटिन संचालन हेतु बड़ी बाजार और जनकपुर में अस्पताल के सामने चिन्हाकित स्थानों का प्रस्ताव तैयार कर भेजने के निर्देश दिये। उन्होंने पशु विकास विभाग को केल्हारी में बकरी पालन तथा मनेंद्रगढ़ में पोल्ट्री फार्म हेतु जमीन का चिन्हांकन जल्द से जल्द प्रस्ताव तैयार कर वरिष्ठ कार्यालय को जानकारी भेजने के निर्देश दिये। जल जीवन मिशन के तहत कलेक्टर ने शत-प्रतिशत पूर्ण हुए गांवों की जानकारी लेते हुए जनपद सीईओ को भ्रमण के दौरान रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिये है। कि जिन गांवों में एफएचटीसी के कार्य गुणवत्तापूर्ण हुए हैं या नहीं। जल संसाधन विभाग को निर्देश देते हुए उन्होंने जिले के समस्त बांध एवं जलाशयों का भ्रमण कर कितने स्थानों पर नहरों के माध्यम से पानी की आपूर्ति की जा रही है और कितने स्थानों पर नहर का उपयोग नहीं हो रहा है उसकी जानकारी एक माह के अंदर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये।

कलेक्टर ने 17 प्लस उम्र के बच्चों का शत-प्रतिशत आयुष्मान कार्ड बनाये जाने हेतु चिकित्सा विभाग को अन्य विभागों से समन्वय स्थापित कर आयुष्मान कार्ड पूर्ण करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने निर्देश दिया कि जिन विभागों को भूमि आवंटित हो चुकी है, वे अपनी भूमि पर घेरा बंदी या खूंटा गाड़ने का कार्य शीघ्र पूरा करें। पुराने पेंशन मामलों, कलेक्टर कार्यालय से पीडब्ल्यूडी चौक और पीडब्ल्यूडी से बाजार तक रोड किनारे जितने भी अवैध दुकानें है उसको तत्काल हटाने के भी निर्देश दिए। उन्होंने स्कूलों में जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र और आय प्रमाण जल्द से जल्द पूर्ण कराकर प्रमाण पत्र बांटने के लिए कहा इसके अलावा अटल आवास की निर्माण, ट्राइबल मल्टी मार्केटिंग के भूमि आबंटित, प्रधानमंत्री सड़क योजना के द्वारा बन रहे सड़क को पूर्ण करने, शहीद वीर नारायण सिंह श्रम अन्न योजना के लिए आवास आबंटन तथा जल शक्ति मिशन में यूजर आईडी लॉगिन और जिओ ट्रैकिंग की प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने के भी निर्देश दिए।

इस बैठक में अपर कलेक्टर अनिल सिदार, संयुक्त कलेक्टर सी.एस. पैकरा, एसडीएम प्रवीण कुमार भगत, तहसीलदार मनेंद्रगढ़, केल्हारी, भरतपुर, कोटाडोल, जनपद सीईओ मनेंद्रगढ़, खड़गवां, भरतपुर, समस्त नगर पंचायत सीएमओ सहित जिले के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

की शिकायत-भाजपा ने वोटर लिस्ट से नाम हटवाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के एक प्रतिनिधि मंडल ने बुधवार को इलेक्शन कमीशन के साथ मुलाकात की। आप ने आरोप लगाया कि दिल्ली में विधानसभा चुनाव से पहले बड़े पैमाने पर वोटर लिस्ट से लोगों के नाम हटाए गए हैं। चुनावों को प्रभावित करने के लिए भाजपा वोटर्स के नाम कटवा रही है। संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भाजपा पर साजिश रचने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि जिन लोगों के नाम लिस्ट से हटाए गए हैं, उनमें दलित, पिछड़े और पूर्वांचल के लोग शामिल हैं। इलेक्शन कमीशन ने हमें उचित कदम उठाने का भरोसा दिया है। कहा है कि आगे बिना वेरिफिकेशन किए वोटर लिस्ट से बड़े पैमाने पर नाम नहीं काटे जाएंगे। केजरीवाल बोले- 3000 पन्नों के दस्तावेज में भाजपा के खिलाफ सबूत केजरीवाल ने कहा, हमने 3000 पन्नों का दस्तावेज पेश किया था। इसमें सबूत थे कि भाजपा बड़े पैमाने पर वोटर्स के नाम लिस्ट से कटवाने की साजिश रच रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि शाहदरा में भाजपा के पदाधिकारी ने चोरी छिपे 11 हजार वोटर्स की लिस्ट चुनाव आयोग को दी और चुनाव आयोग ने इस पर काम करना शुरू कर दिया। जनकपुरी में 24 भाजपा कार्यकर्ताओं ने 4 हजार 874 वोटर्स के नाम काटने का आवेदन दिया है। तुगलकाबाद के एक पोलिंग बूथ के 1337 वोट में 554 वोट काटने के लिए दो लोगों ने आवेदन किया है। दिल्ली में अगले साल फरवरी में विधानसभा चुनाव होने हैं। दिल्ली विधानसभा का कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। पिछला चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था। तब 70 में से 62 सीटें जीती थीं। भाजपा 8 और कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीत पाई।

ममता बोलीं- जिन्होंने समर्थन किया, उनकी आभारी हूं

नई दिल्ली(एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को कहा कि नेताओं ने मुझे जो सम्मान दिया है, मैं उसके लिए आभारी हूं। मैं बस ये चाहती हूं कि सभी जुड़े रहें और इंडिया गुट अच्छा रहे। ममता ने ये धन्यवाद किस बात पर दिया है, इसे लेकर उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन इसे इंडिया गुट की लीडरशिप से जोड़कर देखा जा रहा है। दरअसल, ममता ने हरियाणा-महाराष्ट्र और उपचुनावों में इंडिया ब्लॉक के खराब प्रदर्शन को लेकर नाराजगी जताई थी। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा, मैंने इंडिया गठबंधन बनाया। इसका नेतृत्व करने वाले इसे ठीक से नहीं चला सकते, तो मुझे मौका दें। मैं बंगाल से ही गठबंधन का नेतृत्व करने के लिए तैयार हूं। इसके बाद इंडिया ब्लॉक के कई नेताओं ने गठबंधन की कमान ममता को सौंपने की बात कही है। इन नेताओं में शिवसेना यूबीटी की प्रियंका चतुर्वेदी और संजय राउत, एनसीपी (एसपी) के शरद पवार और आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव शामिल हैं।

मुयमंत्री ने प्रदेश में नवीन यात्री बस सेवा संचालन के संबंध में ली बैठक

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में नवीन यात्री बस सेवा के संचालन में यात्री सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। ग्रामीण क्षेत्र के यात्रियों की आवश्यकता और इंटरसिटी मार्गों के महत्व को ध्यान में रखते हुए बसों का संचालन किया जाए। टिकट बुकिंग, बस ट्रैकिंग जैसे टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म के समस्त लाभ यात्रियों को सरलता से प्राप्त हों, इसका विशेष रूप से ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि समस्त आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए समयसीमा निर्धारित करें तथा जल्द से जल्द प्रदेश में नवीन यात्री बस सेवा का संचालन आरंभ करना सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जो बस ऑपरेटर परमिट में उल्लेखित नियम शर्तों का पालन नहीं कर रहे हैं, उन पर कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में नवीन यात्री बस सेवा आरंभ करने और इसकी संगठनात्मक संरचना, दायित्व तथा संचालन के संबंध में समत्व भवन में हुई बैठक में अधिकारियों को निर्देशित कर रहे थे। बैठक में अन्य राज्यों में संचालित व्यवस्था की जानकारी भी दी गई। बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में जानकारी दी गई की शहरी, ग्रामीण परिवहन सेवा के साथ-साथ अंतर शहरी अन्तर्राज्यीय नवीन यात्री परिवहन सेवा का प्रबंधन मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में गठित राज्य स्तरीय होल्डिंग कंपनी द्वारा किया

जाना प्रस्तावित है। क्षेत्रीय स्तर पर कंपनियां होंगी और जिला स्तर पर निगरानी के लिए भी परिवहन समितियां का गठन होगा। राज्य स्तरीय और संभाग स्तरीय कार्यालय में कंट्रोल एवं कमांड सेंटर स्थापित किए जाएंगे। नोटिफाईड रूटस पर निविदा प्रक्रिया से ऑपरेटर का चयन तथा अनुबंध होगा। कंपनी, अनुबंधित ऑपरेटर्स को परमिट और संचालन में सहयोग प्रदान करेगी। यात्री बस सेवा संचालन में लगे स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए संभाग स्तर पर ट्रेनिंग सेंटर भी स्थापित किए जाएंगे। यात्रियों की सुविधा और बेहतर बस सेवा संचालन के लिए अद्यतन आईटी टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस का उपयोग किया जाएगा। यात्रियों के लिए ई-टिकट, मोबाइल एप, बस ट्रैकिंग, ऑक्युपेंसी देखने और भुगतान की सरलतम सुविधा उपलब्ध होगी। अनुबंधि ऑपरेटर्स के लिए ऑपरेटर ऐप, वीडियो ऑडिट सॉफ्टवेयर, फील्ड ऑडिट डैशबोर्ड आदि की व्यवस्था होगी।

2035 तक भारत स्थापित करेगा अपना स्पेस स्टेशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि 2025 के अंत तक या 2026 की शुरुआत में, गगनयान मिशन के तहत पहला भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में जाएगा। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने बुधवार को ऐलान किया कि भारत 2035 तक अपना स्पेस स्टेशन स्थापित करेगा। इसे 'भारत अंतरिक्ष स्टेशन' नाम दिया जाएगा। इसके साथ ही, 2040 तक एक भारतीय को चंद्रमा पर भेजने की योजना है। दिल्ली में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में डॉ. सिंह ने बताया कि 2025 के अंत तक या 2026 की शुरुआत

में, गगनयान मिशन के तहत पहला भारतीय अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में जाएगा। साथ ही भारत अपने गहरे समुद्र मिशन के तहत 6,000 मीटर की गहराई में मानव को भेजने की योजना बना रहा है।

उन्होंने कहा, सरकार स्पेस सेक्टर को मैनेज करने के लिए एक नए कानून पर काम कर रही है। इस सेक्टर में पिछले चार साल में प्राइवेट प्लेयर्स ने सैटेलाइट के निर्माण और लॉन्च में अहम भूमिका निभाई है, जिसके चलते काफी सुधार हुआ है।

डॉ. सिंह ने कहा कि 2014 में जहां स्पेस स्टार्ट-अप्स की संख्या सिर्फ एक थी, वह अब बढ़कर 266 हो गई है। उन्होंने बताया कि भारत ने श्रीहरिकोटा लॉन्च साइट से अब तक 432 विदेशी उपग्रह लॉन्च किए हैं, जिनमें से 397 पिछले 10 साल में ही लॉन्च किए गए हैं।

महाराष्ट्र में अंबेडकर स्मारक में तोड़फोड़ के बाद हिंसा

परभणी (एजेंसी)। आरोपी ने मंगलवार को रेलवे स्टेशन के सामने अंबेडकर स्मारक में संविधान की प्रतिकृति को तोड़ने की कोशिश की थी। पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर लिया है।

महाराष्ट्र के परभणी में बुधवार को अंबेडकर स्मारक में तोड़फोड़ के विरोध में बुलाए गए बंद के दौरान हिंसा भड़क गई है। परभणी के कई इलाकों में दुकानों-गाड़ियों में तोड़फोड़ और आगजनी की गई। भीड़ को काबू करने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। कुछ इलाकों में लाठीचार्ज भी किया गया। परभणी में बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है। प्रशासन ने इलाके में धारा 144 लगा दी है। परभणी से लगे हिंगोली में भी हिंसा हुई है। पुलिस के मुताबिक आरोपी सोपन दत्तात्राव पवार (45) ने

मंगलवार को रेलवे स्टेशन के सामने अंबेडकर स्मारक में संविधान की प्रतिकृति को तोड़ने की कोशिश की। इसके बाद लोगों ने उसे बुरी तरह पीटा।

महाराष्ट्र चुनाव- विपक्ष ईवीएम गड़बड़ी की शिकायत लेकर सुप्रीम कोर्ट जाएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में हेरफेर का आरोप लगाते हुए विपक्षी गठबंधन अब सुप्रीम कोर्ट जाने की तैयारी में है। चुनाव आयोग के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने के फैसले की घोषणा मंगलवार को एनसीपी-शरद पवार के नेता प्रशांत जगताप ने की। जगताप पुणे की हडपसर सीट से विधानसभा चुनाव हार गए थे। विपक्षी गठबंधन 13 दिसंबर को ईवीएममें गड़बड़ी को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाएगा।

यह फैसला मंगलवार को विपक्षी नेताओं के बीच बैठक के बाद लिया गया। यह मीटिंग शरद पवार के घर पर हुई थी। इसमें आप संयोजक अरविंद केजरीवाल और जाने-माने वकील और कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी भी शामिल हुए।

जम्मू-कश्मीर में फिर लागू होगा दरबार मूव

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर की उमर अब्दुल्ला सरकार राज्य की 150 साल पुरानी दरबार मूव परंपरा को फिर से बहाल करने की तैयारी में है। बुधवार को मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सिविल सोसाइटीज के प्रतिनिधियों के साथ तीन घंटे की बैठक की। बैठक के बाद उन्होंने बताया कि दरबार मूव को फिर से शुरू करेंगे। जम्मू का अपना महत्व है और हम इसकी विशिष्टता को कम नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा कि मैं ये नहीं समझ पा रहा हूं कि विधानसभा चुनाव के प्रचार में पार्टियों इस मुद्दे को शामिल क्यों नहीं किया गया था। चुनाव

के नतीजे आने के बाद ही इस बारे में चर्चाएं तेज हुई हैं। हमने अपने घोषणापत्र में इस मुद्दे को शामिल किया था। जम्मू-कश्मीर में श्रीनगर और जम्मू के बीच राजधानी बदलते रहने की 152 साल पुरानी परंपरा 1872 में जम्मू-कश्मीर के डोगरा राजवंश के महाराजा रणबीर सिंह ने शुरू की थी। एलजीमनोज सिन्हा ने जून, 2021 में यह परंपरा खत्म कर दी थी। इर परंपरा के तहत गर्मियों में राजधानी श्रीनगर और सर्दियों में जम्मू शिफ्ट कर दी जाती थी। सर्दी और गर्मी से बचने के लिए ऐसा किया जाता था। राजधानी ट्रांसफर करने से श्रीनगर और जम्मू दोनों की जगहों के व्यापार में 6-6 महीने बहुत तेजी रहती थी। दो माह पहले जम्मू-कश्मीर मंत्रालय से जुड़े सूत्रों ने दैनिक भास्कर को बताया था कि अब्दुल्ला सरकार जल्द ही दरबार मूव परंपरा की बहाली पर फैसला ले सकती है।

राहुल गांधी बोले- हम अडाणी पर चर्चा नहीं छोड़ेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के शीतकालीन सत्र का आज 12वां दिन है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा कि हम अडाणी मुद्दे पर चर्चा नहीं छोड़ेंगे। राहुल ने लोकसभा स्पीकर ओम बिरला से भी मुलाकात की और कार्यवाही से अपमानजनक बातें हटाने की मांग की। हमारा मकसद है कि संसद चले, सदन में चर्चा हो। वे (सत्ता पक्ष) मुझे क्या कहते हैं, ये मायने नहीं रखता। हम चाहते हैं कि

13 दिसंबर को संविधान पर चर्चा हो। इधर, राज्यसभा में सभापति और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर हंगामा हुआ। राज्यसभा पहले 12 बजे तक, फिर 12 दिसंबर तक स्थगित कर दी गई। राज्यसभा में केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि जॉर्ज सोरोस और सोनिया गांधी का क्या संबंध है, ये सामने आना चाहिए। विपक्ष ने 10 दिसंबर को राज्यसभा के सेक्रेटरी को धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने का नोटिस दिया था। इसमें 60 सांसदों के दस्तखत थे।

सांसद सिंधिया से बोले- आप लेडी किलर है

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी ने लोकसभा में बुधवार को बीजेपी सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया को लेडी किलर कहा। इसके बाद सदन में हंगामा हुआ और कार्यवाही स्थगित कर दी गई। भाजपा ने बनर्जी को सस्पेंड करने की मांग की है। दरअसल, बनर्जी सदन में डिजास्टर मैनेजमेंट पर अपनी बात रख रहे थे। इसी दौरान केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय और सिंधिया ने टोकना शुरू कर दिया। बात कोविड तक पहुंच गई। इसे लेकर दोनों सांसदों में तीखी बहस हुई। उस वक्त पीठासीन अधिकारी ए. राजा ने दोनों को टोकने की कोशिश की, लेकिन कल्याण बनर्जी नहीं रुके।

सिंधिया ने कहा कि किसके चेहरे पर खलबली है और किसके चेहरे पर मुस्कुराहट है आप खुद समझ सकते हैं। इस पर कल्याण बनर्जी बोले, %सिंधिया जी आप बहुत सुंदर दिखते हैं, तो ये नहीं है कि आप सुंदर आदमी हैं, आप विलेन भी हो सकते हैं। सिंधिया ने कहा कि आप निजी टिप्पणी कर रहे हैं। मेरा नाम ज्योतिरादित्य सिंधिया है। अगर मेरे परिवार के बारे में गलत बोलेंगे तो मैं बर्दाश्त नहीं करूंगा।

निमाड़ के संत सियाराम बाबा पंचतत्व में विलीन

खरगोन (एजेंसी)। निमाड़ के प्रसिद्ध संत सियाराम बाबा पंचतत्व में विलीन हो गए। खरगोन के कसरावद के तेली भट्यान गांव में नर्मदा किनारे उनका अंतिम संस्कार किया गया। साधु-संतों ने उन्हें मुखाग्नि दी। इस दौरान लाखों की संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने नम आंखों से उन्हें विदाई दी। सीएम डॉ. मोहन यादव भी अंतिम संस्कार में शामिल हुए।

इससे पहले सियाराम बाबा की उनके आश्रम से नर्मदा घाट तक अंतिम यात्रा निकाली गई। इस दौरान श्रद्धालुओं ने जय सियाराम के नारे लगाए। करीब 3 लाख लोगों ने बाबा के अंतिम दर्शन किए। दोपहर करीब 3 बजे सीएम डॉ. मोहन यादव ने आश्रम पहुंचकर बाबा को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने बाबा की

समाधि व क्षेत्र को पवित्र और पर्यटन स्थल बनाने की घोषणा की। बता दें कि प्रसिद्ध संत सियाराम बाबा का 110 वर्ष की आयु में निधन हो गया। बाबा ने बुधवार को मोक्षदा एकादशी पर सुबह 6:10 बजे अंतिम सांस ली। बाबा पिछले 10 दिन से निमोनिया से पीड़ित थे। निधन से देशभर में उनके अनुयायियों में शोक की लहर है। संत सियाराम के अनुयायियों ने बताया, बाबा का असली नाम कोई नहीं जानता। वे 1933 से नर्मदा किनारे रहकर तपस्या कर रहे थे। 10 साल तक खड़े रहकर मौन तपस्या की। वे करीब 70 साल से रामचरित मानस का पाठ भी कर रहे थे। उन्होंने अपने तप और त्याग से लोगों के हृदय में जगह बनाई। उनके मुंह से पहली बार सियाराम का उच्चारण हुआ था, तभी से लोग उन्हें संत सियाराम बाबा कहकर पुकारते हैं।

खड़गे बोले- धनखड़ खुद को आरएसएस का एकलव्य बताते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। राज्य सभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर इंडिया ब्लॉक ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- सभापति राज्यसभा में स्कूल के हेडमास्टर की तरह व्यवहार करते हैं। विपक्ष का सांसद 5 मिनट भाषण दे तो वे उस पर 10 मिनट तक टिप्पणी करते हैं। सभापति सदन के अंदर प्रतिपक्ष के नेताओं को अपने विरोधी के तौर पर देखते हैं। सीनियर-जूनियर कोई भी हो, विपक्षी नेताओं पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर अपमानित करते हैं। उनके व्यवहार के कारण हम अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए मजबूर हुए हैं। सदन में एक्सपीरियंस्ड नेता हैं, जर्नलिस्ट हैं, लेखक हैं, प्रोफेसर हैं। कई फील्ड में काम कर सदन में आए हैं। 40-40 साल का अनुभव रहा है, ऐसे नेताओं को भी सभापति प्रवचन सुनाते हैं। आमतौर पर विपक्ष चेयर से प्रोटेक्शन मांगता है, अगर सभापति ही प्रधानमंत्री और सत्तापक्ष का गुणगान कर रहा हो तो विपक्ष की कौन सुनेगा। 3 साल में धनखड़ का आचरण पद की गरिमा के विपरीत रहा है। कभी सरकार की तारीफ के कसीदे पढ़ते हैं, कभी खुद को आरएसएस का एकलव्य बताते हैं।

सुप्रीम कोर्ट बोला-गुजारे भत्ते का मकसद पति को सजा देना नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने पारिवारिक विवाद के मामले में 10 दिसंबर को एक आदेश दिया कि पति अपनी पत्नी और बच्चों को 5 करोड़ रुपए का गुजारा-भत्ता दे। कोर्ट ने आदेश दिया कि पति फाइनल सेटलमेंट के तौर पर यह रकम पत्नी को दे।

कोर्ट ने आदेश के दौरान यह साफ कर दिया कि गुजारा-भत्ता देने का मकसद यह नहीं है कि पति को सजा दी जाए। हम यह चाहते हैं कि पत्नी और बच्चे सम्मानित तरीके से जीवन गुजार सकें।

जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस प्रसन्ना बी की बेंच ने कहा कि सेटलमेंट में से एक करोड़ की रकम उनके बेटे के गुजारे-भत्ते और उसकी आर्थिक सुरक्षा के लिए तय की जाए।

2 दशक तक अलग रहे, कोर्ट बोला- शादी निभाना अब संभव नहीं इस केस में पति-पत्नी शादी के 6 साल बाद करीब 2 दशक तक अलग रहे। पति ने पत्नी पर आरोप लगाया था कि वे परिवार के साथ सही व्यवहार नहीं करती हैं। पत्नी का आरोप था कि पति का व्यवहार उनके लिए ठीक नहीं है। ऐसे में अदालत ने कहा कि दोनों पक्षों का शादी का नैतिक दायित्व निभाना संभव नहीं है। दोबारा शादी का संबंध निभा नहीं सकते और यह शादी टूट चुकी है।

कोर्ट ने कहा- पत्नी बेरोजगार, पति 12 लाख महीना कमाता है कोर्ट ने फैसला सुनाते वक्त कहा कि पत्नी बेरोजगार है। वे घर का कामकाज करती है। उधर, पति फॉरेन बैंक में मैनेजीरियल पोस्ट पर है और हर महीना करीब 10-12 लाख रुपए कमाता है।

डिंपल बोलीं- अडाणी मुद्दे से हमें कोई लेना-देना नहीं

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव ने बुधवार को दिल्ली में कहा, हम न तो सोरोस मुद्दे के साथ हैं और न ही अडाणी मुद्दे के साथ। हमारा मानना है, सदन चलना चाहिए। हमें उम्मीद है, दोनों पक्षों के लोग सदन के कामकाज के प्रति समर्पण दिखाएंगे। समाजवादी पार्टी चाहती है कि सदन चले। सपा सांसद ने साफ किया कि समाजवादी पार्टी संविधान को लेकर सदन में होने वाली चर्चा में भी हिस्सा लेगी। उन्होंने कहा कि शुक्रवार-शनिवार को सदन में संविधान पर चर्चा होनी है। समाजवादी पार्टी उसमें हिस्सा लेगी, हमें उम्मीद है कि सदन चलेगा। डिंपल का बयान संसद के मौजूदा गतिरोध के बीच आया है, जिसमें कांग्रेस अडाणी मुद्दे पर जेपीसी की मांग कर रही है।केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले ने डिंपल के बयान को लेकर तंज कसा है। उन्होंने कहा, इंडिया गठबंधन में एकमत नहीं होगा, क्योंकि वहां हर पार्टी के लोग हैं। एक साल से ज्यादा दिन गठबंधन को बने हो गए हैं, लेकिन उनका संयोजक नहीं बना है। इनमें एकमत नहीं है। इससे पहले सपा के राष्ट्रीय महासचिव राम गोपाल यादव ने

कांग्रेस को लेकर बड़ा बयान दिया था। 8 दिसंबर को राम गोपाल ने सैफई में कहा था, समाजवादी पार्टी चाहती है कि इंडी गठबंधन कायम रहे और हम साथ मिलकर चुनाव लड़ें। अभी तो गठबंधन के नेता खड़गे साहब (मल्लिकार्जुन खड़गे) हैं। राहुल गांधी तो अभी इंडी गठबंधन के नेता नहीं हैं। चाहे लोकसभा का चुनाव हो या विधानसभा का, कांग्रेस कहीं अच्छा परफॉर्म कर नहीं पाई। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस हिमाचल प्रदेश में चार की चार सीटें हार गई। कर्नाटक में इनकी सरकार है, वहां भी आधी सीटें हार गए। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में अगर ठीक परफॉर्मेंस हो जाता, तो आज मोदी प्रधानमंत्री होते ही नहीं। इंडी गठबंधन है, ठीक है और रहना चाहिए। बिना गठबंधन के इन तिकड़मी में लोगों को हराया नहीं जा सकता है।

संसद में सपा और कांग्रेस सांसदों के सिटिंग अरेंजमेंट को लेकर दोनों पार्टियों के बीच तकरार चल रही है। सपा सुप्रीमो और सदन में देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव को 8वें ब्लॉक से छठे ब्लॉक में शिफ्ट कर दिया गया। बीते दिनों सपा ने खुले तौर पर नाराजगी का इजहार किया।

टीम इंडिया के सामने लगे अल्लाह हू अकबर के नारे

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंडर-19 एशिया कप के फाइनल मुकाबले में बांग्लादेश ने भारत को 59 रन से हरा दिया। भारत की हार से फैंस की उम्मीदें टूट गई, वहीं बांग्लादेश ने लगातार दूसरी बार खिताब अपने नाम किया।

ये मुकाबला रविवार को खेला गया था। वहीं इस दौरान स्टेडियम में अल्लाह हू अकबर के नारे लगने लगे। दुबई में दर्शकों की भीड़ बांग्लादेश के पक्ष में दिखी और बड़ी संख्या में फैंस डिफेंडिंग चैंपियन के समर्थन में जुटे थे। खेल के दौरान दुबई स्टेडियम के अंदर अल्लाह हू अकबर के नारे गूंजते रहे। भारत के खिलाफ मैच के आखिरी मिनटों में जब बांग्लादेश जीत के बिलकुल करीब था, तब कप्तान अजीजुल हकीम तमीम को भीड़ को जोर-जोर से अल्लाह हू अकबर के नारे लगाने के लिए प्रेरित करते देखा गया। श्रीलंका के पूर्व ऑफ-ब्रेक गेंदबाद रोशन अबेसिंघे ने कहा कि, क्या वह भीड़ को खुश करने की कोशिश कर रहे हैं? बहुत बढ़िया दूसरे ओर भारत के पूर्व तेज गेंदबाज अतुल वासन ने कहा कि, सभी शोमैन हैं। वे जानते हैं कि दर्शक दीर्घा में खुद को कैसे दिखाना है। वहीं मैच की बात करें तो, फाइनल में भारत ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया। बांग्लादेश ने 49.1 ओवर्स में 198 रन का स्कोर बनाया। जिसके जवाब में भारतीय टीम 139 रन पर ही सिमट गई।

बांग्लादेश की तरफ से रिजान हुसैन ने 47 गेंदों में पर 65 रन बनाए।

खेलों को बढ़ावा देने और निष्पक्ष चयन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कानून बनाएगा पंजाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने एक नया कानून बनाने की मंजूरी दे दी जिसका उद्देश्य राज्य में खेलों को बढ़ावा देना और खिलाड़ियों का निष्पक्ष चयन सुनिश्चित करना है। प्रस्तावित कानून- पंजाब राज्य (खेलों का विकास और प्रोत्साहन) अधिनियम 2024 - खेल संघों के कामकाज में पारदर्शिता के लिए एक कानूनी ढांचा बनाने में भी एक लंबा रास्ता तय करेगा। खेल विभाग की एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री मान ने कहा कि अधिनियम का उद्देश्य राज्य में खेलों के विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की अच्छी प्रथाओं को अपनाना और खिलाड़ियों का निष्पक्ष चयन सुनिश्चित करना है। मान ने कहा कि अधिनियम खेल संघों के कामकाज में पारदर्शिता के लिए एक कानूनी ढांचा बनाने में भी एक लंबा रास्ता तय करेगा। उन्होंने कहा, ''यह राज्य स्तर पर अपने जिलों या राष्ट्रीय स्तर और अन्य प्रतियोगिताओं में राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों का निष्पक्ष चयन भी सुनिश्चित करेगा।'' मान ने कहा कि यह खेल संघों द्वारा सरकारी धन के उचित उपयोग में भी मदद करेगा। प्रस्तावित अधिनियम के अनुसार प्रत्येक जिले में एक विशिष्ट खेल के लिए एक संघ पंजीकृत किया जाएगा।

भारत 14 मार्च से एशियाई कप क्वालीफायर की तैयारी शुरू करेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय फुटबॉल टीम एएफसी एशियाई कप 2027 क्वालीफायर के लिए अपनी तैयारी 14 मार्च से राष्ट्रीय शिविर के साथ शुरू करेगी जो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के आखिरी लीग मैच के दो दिन बाद होगा।

ड्रॉ की पूर्व संध्या पर भारत के कोच मनोलो मार्केज ने अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) के अध्यक्ष कल्याण चौबे को 'लंबे शिविर' का प्रस्ताव दिया। इगोर स्टिमक से पदभार संभालने के बाद मार्केज ने चार मैचों में अभी तक सफलता का स्वाद नहीं चखा है। एआईएफएफ ने एक बयान में कहा, ''अपने विपणन भागीदारों से परामर्श करने के बाद एआईएफएफ को लगा कि राष्ट्रीय शिविर इंडियन सुपर लीग 2024-25 के आखिरी लीग मैच के दो दिन बाद 14 मार्च को शुरू हो सकता है।

'' 56 वर्षीय मार्केज ने कहा, ''दो दिनों तक मेरी एआईएफएफ अध्यक्ष, सीनियर अधिकारियों और एआईएफएफ के तकनीकी सदस्यों के साथ बैठकें हुईं। मुझे यकीन है कि हमने जिस तरह की तैयारियां की हैं उससे राष्ट्रीय टीम एशियाई कप क्वालीफायर में अच्छा प्रदर्शन करेगी। ''

क्रिस्टल पैलेस ने मैनचेस्टर सिटी को बराबरी पर रोका, मैनचेस्टर यूनाइटेड को नॉटिंघम फॉरेस्ट ने हराया

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिस्टल पैलेस ने इंग्लिश प्रीमियर लीग फुटबॉल में मैनचेस्टर सिटी को 2-2 की बराबरी पर रोक दिया जिससे चार बार की गत चैम्पियन के लिए खिताब का बचाव करना मुश्किल होगा। नॉटिंघम फॉरेस्ट ने मैनचेस्टर यूनाइटेड को 3-2 से हराकर उलटफेर किया। सिटी ने बुधवार को नॉटिंघम फॉरेस्ट को हराकर सात मैचों के बाद पहली जीत दर्ज की थी लेकिन इस ड्रॉ मुकाबले के साथ उसे अंक साझा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। सिटी की टीम मैच में दो बार पिछड़ रही थी लेकिन एर्लिंग हालैंड और रिको लुइस के गोल से टीम वापसी करने में सफल रही। क्रिस्टल पैलेस के लिए डेनियल मुनोज और मेक्सेंस लेकरोइक्स ने गोल किये।

इस ड्रॉ मैच के बाद पेप गार्डियोला की टीम तालिका में चौथे स्थान पर है और शीर्ष पर काबिज लिवरपूल से आठ अंक पीछे हैं। एस्टोन विला ने अंतिम स्थान पर मौजूद साउथेम्प्टन को 1-0 से हराया जबकि ब्रेंटफोर्ड ने न्यूकैसल के खिलाफ 4-2 से जीत हासिल की। मैनचेस्टर यूनाइटेड के खिलाफ फॉरेस्ट ने दूसरे मिनट में निकोला मिलेनकोविच के हेडर से बढ़त बनाई लेकिन रासमस होजलुंड ने यूनाइटेड के लिए बराबरी का गोल दाग दिया। मार्गन गिब्स व्हाइट और क्रिस वुड ने दूसरे हाफ में सात मिनट के अंदर दो गोल कर फॉरेस्ट को 3-1 से आगे कर दिया। ब्रूनो फर्नांडिस ने 61वें मिनट में गोल कर घरेलू टीम की वापसी करायी लेकिन यह मैच का अंतिम गोल साबित हुआ।

एरिना सबालेंका ने डब्ल्यूटीए की साल की सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ी का पुरस्कार जीता

सेंट पीटर्सबर्ग (अमेरिका)। स्टार टेनिस खिलाड़ी एरिना सबालेंका को पहली बार डब्ल्यूटीए की साल की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार मिला। बेलारूस की 26 वर्षीय सबालेंका ने 2024 में दो ग्रैंड स्लैम खिताब जीते और दुनिया की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी भी बनीं। टेनिस मीडिया के मतदान के अन्य परिणामों में ऐमा नवारो को सबसे अधिक सुधार करने वाली खिलाड़ी के रूप में सम्मानित किया गया। पाउला बडोसा को साल में सर्वश्रेष्ठ वापसी करने वाली खिलाड़ी और लुलु सन को साल की सर्वश्रेष्ठ नयी खिलाड़ी चुना गया।

सारा इरानी और जैस्मिन पाओलिनी को साल की सर्वश्रेष्ठ युगल टीम चुना गया। सबालेंका ने 2024 में जनवरी में ऑस्ट्रेलियन ओपन और सितंबर में अमेरिकी ओपन के साथ इस सत्र में दो अन्य खिताब जीते। उनका जीत-हार का रिकॉर्ड 56-14 रहा। उन्होंने लगभग एक करोड़ डॉलर की पुरस्कार राशि जीती। उन्होंने अक्टूबर में ईगा स्वियातेक को पछाड़कर शीर्ष रैंकिंग हासिल की।

भारत के कुश मैनी ने रचा इतिहास

नई दिल्ली (एजेंसी)। कुश मैनी ने फॉर्मूला 2 के 2024 सीजन में फिर से इतिहास रच दिया। इनविक्टा रेसिंग टीम ने फारमूर्ला 2 कंस्ट्रक्टर्स चैंपियनशिप जीती, जिससे 24 वर्षीय ये खिलाड़ी जूनियर फॉर्मूला के शिखर पर एफआईए कंस्ट्रक्टर्स वर्ल्ड चैंपियनशिप जीतने वाला पहला और एकमात्र भारतीय बन गया। ये शानदार उपलब्धि कुश के लिए एक शानदार वर्ष में इजाफा करती है, जो पहले एफ-2 पोल पोजीशन हासिल करने वाले पहले भारतीय बने थे। सीजन के उतार-चढ़ाव के बावजूद, कुश ने इनविक्टा की सफलता में अहम भूमिका निभाई, जिसमें हंगरी में एक रेस जीत सहित पांच पोडियम हासिल किए। जेद्दा में उनकी पोल पोजीशन ने टीम के प्रमुख अभियान की दिशा तय की, जिसका समापन कुश की पूर्व टीम कैंपोस रेसिंग पर 34.5 अंकों के अंतर से जीत के साथ हुआ। अंतिम रेस के लिए, मैनी ने अबू धाबी में एक ठोस क्वालीफाइंग राउंड खेला, जिसके परिणामस्वरूप पी6 पर रहे और दोनों रेस में उनकी शुरुआत और भी बेहतर रही। उन्होंने अपने पहले लैप में स्प्रिंट में 6 स्थान और अपने पहले लैप में फीचर में 3 स्थान का फायदा हुआ। हालांकि, उनके फ्लोर पर कुछ नकुसार के कारण उन्हें स्प्रिंट के लिए बैकफुट पर आना पड़ा। जबकि एक रूके हुए पिटस्टॉप ने रविवार को फीचर रेस में सीजन को उच्च स्तर पर खत्म करने की उनकी योजनाओं को बाधित किया।

मैनी ने इस शानदार उपलब्धि के बाद कहा कि, हमने जिस तरह से शुरुआत की, उसे देखते हुए ये वह साल नहीं था, जो मैं चाहता था, लेकिन फिर भी कंस्ट्रक्टर्स चैंपियनशिप सहित बहुत सारी सकारात्मक चीजें मिली। इनविक्टा में सभी को अच्छे प्रदर्शन के लिए धन्यवाद और भविष्य के लिए शुभकामनाएं। मैं आगे क्या करने वाला हूं इसका इंतजार कर रहा हूं और अगले साल के लिए तैयार हूं।

चोटिल हैं जसप्रीत बुमराह?

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच तीसरा टेस्ट 14 दिसंबर से ब्रिसबेन के गाबा मैदान पर खेला जाएगा। भारत के एडिलेड टेस्ट गंवाने के बाद अब 5 मैच की सीरीज 1-1 से बराबर हो गई है। भारतीय टीम एडिलेड टेस्ट गंवाने के बाद एक्शन मोड में है और ब्रिसबेन के लिए रवाना होने से पहले मंगलवार को एडिलेड में ही जमकर अभ्यास किया। लेकिन इस प्रैक्टिस सेशल में टीम के उपकप्तान जसप्रीत बुमराह नहीं उतरे। दरअसल, उन्हें एडिलेड टेस्ट में चोट लगी थी या फिर टीम मैनेजमेंट ने उनके वर्कलोड मैनेजमेंट के तहत ऐसा किया, ये देखने वाली बात होगी। सिराज ने भी मंगलवार को अभ्यास नहीं किया।

भारत के 4 में से तीन पारियों में 200 से कम स्कोर पर सिमटने के बाद, बल्लेबाजी यूनिट ने एडिलेड ओवल में नेट पर खूब पसीना बहाया और अपनी कमियों को दूर करने की कोशिस की। भारत ने अब तक सीरीज में 150, 487/6 पर्थ में, 180, 175 एलिडेल में स्कोर बनाया। दो भारतीय बल्लेबाजों ने अब तक शतक बनाया है, जिसमें यशस्वी जायसवाल और विराट कोहली ने पर्थ में 161 और नाबाद 100 रन की पारी खेली थी।

केएल राहुल ने सलामी बल्लेबाज के रूप में अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन अपनी किसी भी पारी को बड़ी पारी में नहीं बदल पाए, उनका सर्वोच्च स्कोर 77 रन रहा है। ऑलराउंडर नितीश कुमरा रेड्डी ने निचले क्रम में बल्लेबाजी करते हुए प्रभावशाली प्रदर्शन किया है और दोनों टेस्ट मैचों में अहम योगदान दिया। उनके 163 रन सीरीज में अब तक तीसरा सर्वोच्च स्कोर हैं, जायसाल ने 185 रन बनाए हैं और तालिका में टॉप पर चल रहे ट्रैविस हेड ने 240 रन बनाए हैं।

एशिया कप से जूनियर विश्व कप के लिए क्वालीफाई करना चाहेगी भारतीय महिला हॉकी टीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम रविवार को यहां एशिया कप में बांग्लादेश के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी और उसकी निगाहें अपना खिताब बचाने के साथ अगले साल के जूनियर विश्व कप के लिए सीधे क्वालीफाई करने की होगी। सात से 15 दिसंबर तक होने वाला यह टूर्नामेंट चिली में होने वाले एफआईएच जूनियर विश्व कप 2025 के लिए क्वालीफाइंग टूर्नामेंट भी है।

कोच तुषार खांडेकर के मार्गदर्शन में भारत की अगुआई ज्योति सिंह करेंगी जबकि साक्षी राणा उप कप्तान होंगी। टीम में दीपिका, वैष्णवी विट्ठल फाल्के, सुनीता टोप्पो और मुमताज खान जैसी खिलाड़ी भी शामिल हैं जो पिछले साल की खिताबी जीत के बाद से सीनियर टीम के लिए खेल रही हैं।

पिछले साल भारत ने फाइनल में दक्षिण कोरिया को 2-1 से हराकर पहली बार खिताब जीता था। भारत को पूल ए में चीन, मलेशिया, थाईलैंड और बांग्लादेश के साथ रखा गया है। पूल बी में दक्षिण कोरिया, जापान, चीनी ताइपे, हांगकांग और श्रीलंका शामिल हैं। प्रत्येक टीम अपने पूल में प्रत्येक प्रतिद्वंद्वी के साथ एक बार खेलेगी और प्रत्येक पूल से शीर्ष दो टीम सेमीफाइनल में जगह पक्की करने के साथ अगले साल के विश्व कप में भी जगह बनाएंगी। प्रत्येक पूल की तीसरे और चौथे स्थान पर रहने वाली टीमें जूनियर विश्व कप के लिए अंतिम स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी।

कप्तान ज्योति ने कहा, ''हम मैदान पर उतरने और टूर्नामेंट की मजबूत शुरुआत करने के लिए उत्साहित हैं। खिताब का बचाव करना चुनौतीपूर्ण होगा, लेकिन मुझे यकीन है कि टीम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेगी और हमारे देश को गौरवान्वित करेगी।''

उन्होंने कहा, ''यह टूर्नामेंट बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जूनियर विश्व कप के लिए क्वालीफिकेशन दांव पर है इसलिए हम फिर से खिताब जीतने के लिए दृढ़ हैं। ''

अगर भारत पूल ए में शीर्ष दो टीमों में से एक रहता है तो वह 14 दिसंबर को होने वाले सेमीफाइनल में पहुंच जाएंगे।

टूर्नामेंट का खिताबी मुकाबला 15 दिसंबर को खेला जाएगा।

खेल मंत्री मांडविया ने बधिर खिलाड़ियों के साथ समान रवैया अपनाने का आश्वासन दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने कुआलालंपुर में 10वें एशिया प्रशांत बधिर खेलों में 55 पदक जीतने वाले भारतीय दल को बधाई देते हुए आश्वासन दिया कि बधिर खिलाड़ियों के साथ भी अन्य खिलाड़ियों की तरह समान व्यवहार किया जाएगा। भारत ने एक से आठ दिसंबर तक आयोजित किए गए खेलों में 68 खिलाड़ियों को भेजा था, जिन्होंने आठ स्वर्ण, 18 रजत और 29 कांस्य पदक जीते। इस प्रतियोगिता में कुल 21 देशों ने भाग लिया था तथा भारत कुल मिलाकर पांचवें स्थान पर रहा।

मांडविया ने अपने आवास पर दल के लिए आयोजित सम्मान समारोह के दौरान कहा, ''मैं देश को गौरवान्वित करने के लिए सभी खिलाड़ियों को बधाई देता हूं। 55 पदक जीतना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। यह शानदार प्रदर्शन है।'' उन्होंने कहा, ''मैं आप सभी को हमारे पैरा खिलाड़ियों और ओलिंपिक खिलाड़ियों की तरह समान व्यवहार और सहायता का आश्वासन देता हूं। मैं आपको समान सुविधाएं प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ूंगा। यह मेरा वादा है।

पहली बाजी गंवाने के बाद मैंने मानसिक मजबूती दिखाकर पलटवार किया-डी गुकेश

सिंगापुर । भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने विश्व शतरंज चैंपियनशिप के 11वें दौर में गत चैंपियन डिंग लिरेन को हराने के बाद रविवार को यहां कहा कि पहली बाजी गंवाने के बाद उन्होंने मानसिक मजबूती दिखाई जिससे वह पलटवार करके वापसी करने में सफल रहे। गुकेश ने यहां संवाददाताओं से कहा,''पहली बाजी में हार झेलने के बाद मुझे मानसिक मजबूती दिखाने की जरूरत थी। विश्व चैंपियनशिप की पहली बाजी गवाना अच्छा नहीं माना जा सकता है लेकिन मैंने पलटवार किया और इसके बाद अच्छी शतरंज खेली।''गुकेश पहली बाजी हार गए थे लेकिन उन्होंने तीसरी बाजी जीत कर मुकाबला बराबरी पर ला दिया था। इसके बाद लगातार सात बाजी ड्रॉ रही लेकिन भारतीय खिलाड़ी ने अब 6-5 की बढ़त हासिल करके खिताब की तरफ मजबूत कदम बढ़ा दिए हैं। उन्होंने कहा कि वापसी करवाने में उनकी टीम की भूमिका बहुत अहम रही और जोखिम उठाने का अपने फायदा मिला। भारतीय खिलाड़ी ने कहा, ''इस बीच मुझे वापसी दिलाने के लिए मेरी टीम ने बहुत अच्छा काम किया। मैं यही सोच रहा था कि यह मुकाबला बेहद दिलचस्प है और मुझे जोखिम उठाने का भी फायदा मिला क्योंकि इससे मैंने उसे निश्चित तौर पर हैरानी में डाल दिया।'' गुकेश ने यह मानने से इनकार कर दिया कि चीन का खिलाड़ी 11वीं बाजी में भी ड्रॉ के लिए खेल रहा था।

मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान एवं पर्व का हुआ शुभारंभ

हर्षोल्लास के साथ मनाई गई गीता जयंती

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लाडली बहनों के खाते में राशि का किया अंतरण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रदेश में 11 दिसंबर से 26 जनवरी तक आयोजित होने वाले मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान तथा 11 दिसंबर से 26 दिसंबर तक आयोजित किया जा रहे मुख्यमंत्री जन कल्याण पर्व का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल से शुभारंभ किया। भोपाल में आयोजित गीता जयंती के उपलक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया जिसे स्थानीय जनों ने देखा और सुना। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने इस अवसर पर लाडली बहनों के खाते में दिसंबर माह की किस्त का अंतरण किया।

गीता जयंती के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय कार्यक्रम नगर निगम के टाउन हॉल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विश्व गीता प्रतिष्ठान के प्रतिनिधि उपेन्द्र जी ने गीता सार के संबंध में उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि गीता के माध्यम से भगवान ने हमें कर्म का मार्ग बताया। गीता के संदेश को जन-जन को स्वीकारने की आवश्यकता है। विश्व गीता प्रतिष्ठान के सदस्यों ने मद् भगवत गीता के कर्म योग पाठ का वाचन किया। इस अवसर पर इस्कान संस्था के सदस्यों ने संकीर्तन की प्रस्तुति दी तथा आदि शंकराचार्य द्वारा रचित महात्म का प्रस्तुतीकरण किया। क्षेत्रीय संचालिका ब्राम्हाकुमारी संस्थान निर्मला दीदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गीता महोत्सव का आयोजन आनंद की अनुभूति देता है। गीता कर्म का बीज है। इससे नवीन जीवन की अनुभूति होती है। राजयोगी व्ही के प्रकाश ने गीता ज्ञान सर्व धर्म समभाव एवं विश्व कल्याण के बारे में उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि सभी को एक सूत्र में बांधने का कार्य गीता द्वारा होता है। इस दौरान गीता मानस का परिचय राजेश गिरी जी द्वारा दिया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों के क्रम में वेदांता पब्लिक स्कूल के प्रतिभागियों ने कृष्ण एवं राधा का चरित्र प्रस्तुत किया। ब्राम्हाकुमारी संस्थान के छात्र-छात्राओं ने कृष्णमय स्वर्णिम दुनिया का सजीव प्रस्तुतीकरण किया। इस अवसर पर मद् भगवत गीता को समझने हेतु मूल विधि से भी विश्व गीता संस्थान के प्रतिनिधियों ने प्रबुद्ध जनों को अवगत कराया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति देने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इस्कान एवं विश्व गीता प्रतिष्ठान द्वारा प्रस्तुत गीता आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, कलेक्टर प्रतिभा पाल, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, सहायक आयुक्त दीपावली द्विवेदी, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग प्रतिभा पाण्डेय, पार्षदगण सहित नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारी, प्रबुद्धजन, लाड़ली बहने तथा स्थानीय जन उपस्थित रहे। इसके साथ ही गीता जयंती पर लक्ष्मणबाग संस्थान स्थित गौशाला में गौ पूजन किया गया तथा गौ माता को गुड़, चना एवं आहार खिलाया गया।

एपीएसयू के 12वें दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि होंगे राज्यपाल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा का 12वां दीक्षांत समारोह 12 दिसम्बर को पंडित शंभूनाथ शुक्ल सभागार में आयोजित किया जा रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल होंगे। राज्यपाल पटेल समारोह में विद्यार्थियों को स्वर्णपदक तथा उपाधियों का वितरण करेंगे। समारोह में उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल की भी गरिमामयी उपस्थिति रहेगी। समारोह में शौर्य डोभाल विशिष्ट वक्ता के रूप में अपना उद्बोधन देंगे। समारोह प्रातः11 बजे आरंभ होगा।समारोह में विश्वविद्यालय द्वारा विन्ध्य के गौरव तथा रीवा सैनिक स्कूल के विद्यार्थी रहे थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेन्द्र द्विवेदी को डी लिट की मानद उपाधि दी जाएगी। समारोह में प्रसिद्ध समाजसेवी प्राफेसर अच्युत सामंत को भी डी लिट की मानद उपाधि दी जाएगी। दीक्षांत समारोह में 57 स्वर्ण पदक, 82 पीएचडी उपाधि तथा स्नातकोत्तर उपाधियों का वितरण किया जाएगा। समारोह में कुलगुरू प्रोफेसर राजकुमार आचार्य सहित विशिष्ट अतिथिगण उपस्थित रहेंगे।

कलेक्टर ने कार्यक्रम स्थल का किया निरीक्षण: राज्यपाल मंगुभाई पटेल 12 दिसंबर को एक दिवसीय प्रवास पर रीवा आयेंगे। रीवा में राज्यपाल अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के 12वें दीक्षांत समारोह में शामिल होंगे तथा संजय गांधी अस्पताल में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर प्री नेटल डायग्नोसिस ऑफ हीमोग्लोबिनोपैथीज का भ्रमण करेंगे। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कार्यक्रम स्थलों का भ्रमण कर की गई तैयारियों का निरीक्षण किया तथा आवश्यक निर्देश दिये। कलेक्टर ने विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह के मुख्य कार्यक्रम स्थल तथा शोभा यात्रा सहित अन्य कार्यक्रमों की जानकारी ली तथा की गयी व्यवस्थाओं का अवलोकन किया।

15 महिलाओं के साथ 78 लाख रुपए की ठगी समूह के नाम पर रुपए लेकर गायब हुई महिला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के सिविल लाइन थाना क्षेत्र के अंतर्गत बांस घाट मोहल्ले में समूह के नाम पर 15 महिलाओं के साथ 78 लाख रुपए की ठगी की गई। बुधवार को बड़ी संख्या में महिलाएं एकजुट होकर सिविल लाइन थाने में पहुंची। जहां कार्रवाई की मांग करते हुए थाने में शिकायती आवेदन दिया है।

जानकारी के मुताबिक जिस महिला के खिलाफ कार्रवाई का आवेदन दिया गया है। वह पड़ोस में रहने वाली महिला ही है। जो इन सब से लंबे समय से परिचित थी, लेकिन अब इनसे संपर्क तोड़ दिया और मोहल्ले में नहीं रहती है। महिलाओं ने मंजू सिंह नाम की महिला के खिलाफ ठगी की शिकायत की है।

परिवार सहित घर छोड़ा: ठगी की शिकार हुई महिलाओं की ओर से रिंकी चौरसिया और सुषमा गुप्ता ने बताया कि मंजू पिछले कई दिनों से अपने घर पर नहीं है। वह अचानक परिवार सहित घर से लापता हो गई है। महिला का फोन भी बंद है। इसके

संबंध में किसी को भी किसी प्रकार की जानकारी नहीं है। अब तो यह जानकारी मिल रही है कि वह मकान बेचकर जाने वाली है। ऐसे में हमारे जीवन भर की कमाई बर्बाद हो गई।

एक महिला से 2 से 5 लाख रुपए तक ठगे: संगीता पटेल और रीना लोनिया ने बताया कि 15 महिलाओं से 78 लाख रुपए की ठगी की गई है। एक महिला से 2 लाख रुपए से लेकर 5 लाख रुपए तक की ठगी की गई है। काफी समय तक हमने उनसे संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन जब किसी भी तरह से संपर्क नहीं हो पाया तो मजबूरन हम शिकायत करने थाने पहुंचे हैं। हम सभी मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखते हैं। हमारे लिए 1-2 लाख रुपए बहुत बड़ी रकम और जीवन भर की कमाई है। सिविल लाइन थाना प्रभारी कमलेश साहू ने बताया कि शिकायती आवेदन प्राप्त हुआ है। आगे वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का हुआ शुभारंभ

अंतिम छोर के व्यक्ति को लाभ देने में सहायक होगा अभियान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रदेश में 11 दिसंबर से 26 जनवरी तक संचालित किये जाने वाले मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का आज शुभारंभ हुआ। जनपद पंचायत रीवा के ग्राम पंचायत बजरंगपुर में आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल ने कहा कि समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति को लाभ दिलाने में यह अभियान सहायक होगा। मुख्यमंत्री जी द्वारा दिये गये निर्देश के परिपालन में अभियान में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ वंचित लोगों को मौके पर ही मिल जायेगा साथ ही आयोजित होने वाले शिविरों में लोगों की समस्याओं का निराकरण भी होगा।

इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सपना त्रिपाठी ने कहा कि सभी विभागीय अधिकारी शिविर में जनकल्याणकारी, हितग्राहीमूलक योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों को दिया जाना सुनिश्चित करायें। उन्होंने कहा कि शिविर में ही हितग्राहियों की समस्याओं का निराकरण करें। उन्होंने अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर 70 वर्ष के अधिक आयु के हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम में सीईओ जनपद हलधर मिश्रा, राजीव शुक्ला, ग्राम पंचायत के सरपंच, विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने जनकल्याण पर्व के कंट्रोल रूम का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 11 दिसम्बर से जनकल्याण पर्व और जनकल्याण अभियान शुरू हो गया है। अभियान की मानीटरिंग के लिए कलेक्ट्रेट कार्यालय में जिला स्तरीय कंट्रोल रूम बनाया गया है। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कंट्रोल रूम का निरीक्षण करते हुए कहा कि सभी सेक्टर आफीसर तथा शिविर प्रभारी से सतत संपर्क रखें। शिविर में प्राप्त आवेदन तथा उनके निराकरण की जानकारी प्रतिदिन दर्ज करें। सेक्टर प्रभारियों के भ्रमण पर भी निगरानी रखें। शिविरों तथा अन्य कार्यक्रमों में शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित हितग्राहियों के फोटो तथा वीडियो प्राप्त करके जनसम्पर्क कार्यालय के माध्यम से प्रचार प्रसार कराएं। नगरीय निकायों तथा जनपद पंचायतों में जनकल्याण अभियान के लिए तैनात दल प्रभारियों, सेक्टर आफीसरों तथा नोडल अधिकारियों के नाम एवं फोन नम्बर कंट्रोल रूम में तत्काल उपलब्ध करा दें। इनसे कंट्रोल रूम के अधिकारी सतत संपर्क में रहें। निरीक्षण के समय अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, परियोजना अधिकारी जिला पंचायत फरहत जैब तथा कंट्रोल रूम के कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का प्रशिक्षण

प्रदेश में 11 दिसंबर से 26 जनवरी तक आयोजित होने वाले मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार की हितग्राहीमूलक योजनाओं का पात्र हितग्राहियों को लाभांवित किया जायेगा। प्रत्येक दिन की गतिविधि तथा लाभांवित हितग्राहियों की जानकारी सीएम हेल्पलाइन पोर्टल पर दर्ज होगी। इस संबंध में कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रबंधक लोक सेवा रविकांत पाण्डेय ने प्रशिक्षण में प्रत्येक दिवस की शहरी एवं ग्रामीण शिविरों की गतिविधियों की पोर्टल में फीडिंग तथा अन्य आवश्यक जानकारियों की फीडिंग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस दौरान सभी एईजीएम तथा नगर परिषद के कम्प्यूटर ऑपरेटर उपस्थित रहे।

अल्पविराम परिचय कार्यशाला का आयोजन आज से जनपद स्तर पर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय कर्मचारियों में आनंद की अनुभूति कराने एवं उनके दैनंदनीय कार्यों में सकारात्मकता के भाव में वृद्धि के उद्देश्य से जनपद स्तर पर अल्पविराम परिचय कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी ने बताया कि रायपुर कर्चुलियान में 12 दिसम्बर को, रीवा में 13 दिसम्बर को, सिरमौर में 17 दिसम्बर को, जवा में 18 दिसम्बर को, त्योंथर में 19 दिसम्बर को तथा गंगेव में 20 दिसम्बर को राज्य आनंद संस्थान भोपाल के सहयोग से प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। कार्यशाला में ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल विकास तथा शिक्षा विभाग के 10-10 प्रतिभागियों तथा स्वास्थ्य, राजस्व, पुलिस, नगरीय निकाय, कृषि व जन अभियान परिषद के पाँच-पाँच शासकीय अधिकारी-कर्मचारियों सहित प्रत्येक जनपद में 60 प्रतिभागियों की उपस्थिति सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए हैं।

अधोसंरचना विकास के साथ उपकरणों की उपलब्धता की जाये सुनिश्चित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि प्रदेश के हर क्षेत्र में उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अधोसंरचना के विस्तार और अत्याधुनिक उपकरणों की खरीदी के प्रयास तेजी से किए जा रहे हैं। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि ये सेवाएं समय पर आम नागरिकों तक पहुँचे। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में प्रदेश के विभिन्न जिला चिकित्सालयों और कैंसर अस्पतालों में अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए की जा रही खरीदी प्रक्रिया की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने निर्देश दिये कि अधोसंरचना विकास के साथ-साथ आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाये। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को प्रक्रिया की सतत मॉनीटरिंग कर समयसीमा के भीतर उपकरण खरीदी का कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने सीटी स्कैन, एमआरआई, कैथलैब, पेट-स्कैन, लाईनैक, और ब्रेकी-थेरेपी जैसे उन्नत उपकरणों की खरीदी प्रक्रिया की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने प्रदेश के चिकित्सकीय संस्थानों में औषधि एवं कंज्यूमेबल की उपलब्धता की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि उक्त सामग्री आवश्यकतानुसार संस्थानों में उपलब्ध हों, यह सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने ट्रांसफर पोर्टल की तैयारी की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि यह पोर्टल सुविधाजनक और पारदर्शी व्यवस्था सुनिश्चित करेगा। उन्होंने विभागीय स्तर पर पोर्टल को और अधिक दुरुस्त करने के निर्देश दिये ताकि ट्रांसफर प्रक्रिया में किसी प्रकार की असुविधा न हो। प्रमुख सचिव स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा संदीप यादव, आयुक्त स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा तरुण राठी, एमडी एमपीपीएचएससीएल मयंक अग्रवाल सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

सामान्य सभा की बैठक स्थगित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला पंचायत की सामान्य सभा की बैठक स्थगित कर दी गयी है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सपना त्रिपाठी ने बताया कि 13 दिसंबर को आयोजित होने वाली सामान्य सभा की बैठक अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दी गयी है।

केन्द्रीय जेल में हुआ गीता महोत्सव

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। केन्द्रीय जेल में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जेल गौशाला को रंगोलियों व फूलों से सजाया गया तथा वृक्षारोपण किया गया। जेल परिसर में गीता पाठ कर विभिन्न मनमोहक भजनों की प्रस्तुतियाँ दी गई। कार्यक्रम में जेल अधीक्षक सतीश कुमार उपाध्याय, उप जेल अधीक्षक संजीव कुमार गेंदले, योगेश परमार, भागीरथ सौर, स्वदीप सिंह, उपेन्द्र द्विवेदी, धीरेन्द्र सिंह सहित समस्त जेल स्टाफ उपस्थित रहा।

सियाराम बाबा को दी श्रद्धांजलि

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। .उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मध्यप्रदेश के पावन निमाड़ क्षेत्र के महान संत, परम पूज्य सियाराम बाबा जी के ब्राह्मालीन होने पर गहन शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि पूज्य बाबा जी का प्रयाण आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्र के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उन्होंने प्रभु राम से अपने परम भक्त को मोक्ष प्रदान करने की प्रार्थना की है।

जनकल्याण अभियान की मॉनीटरिंग के लिए दल तैनात, बनाया कंट्रोल रूम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। . जिले में 11 दिसम्बर से 26 जनवरी तक मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में शिविर लगाकर पात्र हितग्राहियों का चयन किया जाएगा। सभी हितग्राहियों को शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया जाएगा। अभियान की मॉनीटरिंग तथा सूचनाओं को ऑनलाइन दर्ज करने के लिए कलेक्टर प्रतिभा पाल ने दल तैनात किया है। दल में जिला प्रबंधक ई गवर्नेंस आशीष दुबे, जिला प्रबंधक लोक सेवा रविकांत पाण्डेय तथा जिला समन्वयक स्वच्छता मिशन जिला पंचायत फरहत जैब को शामिल किया गया है। इनके सहयोग के लिए सहायक ग्रेड तीन रोहित सिंह बघेल तथा डाटा एंट्री आपरेटर अजीत तिवारी को तैनात किया गया है। कलेक्टर ने दल को अभियान के दौरान डाटा एंट्री की समस्त कार्यवाहियाँ सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अभियान की निगरानी के लिए तथा महत्वपूर्ण सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए जिला स्तरीय कंट्रोल रूम कलेक्ट्रेट कार्यालय में बनाया गया है। इसके साथ-साथ सभी विकासखण्डों में कंट्रोल रूम बनाए गए हैं। जिला स्तरीय कंट्रोल रूम का नोडल अधिकारी जिला प्रबंधक लोक सेवा रविकांत पाण्डेय को बनाया गया है। सहायक नोडल अधिकारी के रूप में कृपाशंकर सोंधिया जिला पंचायत को तैनात किया गया है। कलेक्टर ने कंट्रोल रूम के अधिकारियों और कर्मचारियों को जनकल्याण अभियान के दौरान शिविरवार लाभांवित हितग्राहियों की जानकारी एकत्रित कर उसे सीएम हेल्पलाइन पोर्टल में प्रतिदिन दर्ज करने के निर्देश दिए हैं।

अपर कमिश्नर को दी भावभीनी विदाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय में पदस्थ अपर कमिश्नर अरूण परमार का स्थानांतरण उप सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय के लिए हो गया है। परमार को कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में भावभीनी विदाई दी गई। विदाई समारोह में डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय ने बताया कि परमार सदैव अपनी कार्यकुशलता, सरलता और हसमुख स्वभाव के लिए याद किए जाएंगे। कठिन परिस्थितियों को भी सरलता से सुलझाने की आपकी क्षमता का लाभ मुख्यमंत्री कार्यालय को मिलेगा। डीआईजी ने परमार को शुभमामनाएं दी। अपर कमिश्नर परमार ने कहा कि रीवा में मेरा कार्यकाल कम समय का रहा लेकिन यहाँ की आत्मीयता और कर्मचारियों की कर्मठता सदैव याद रहेगी। कार्यक्रम का संचालन करते हुए रीडर अवनीश शर्मा ने कहा कि रीवा संभाग ने परमार सर के नेतृत्व में राजस्व प्रकरणों के निराकरण में पहली बार प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विदाई अवसर पर परमार को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। कार्यक्रम में रिदम ग्रुप के कलाकारों डॉ विनोद तिवारी, अर्चना शुक्ला तथा सतीश मिश्रा ने स्मृति चिन्ह के रूप में परमार को बांसुरी भेंट की। समारोह में कमिश्नर कार्यालय के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।